सरस सलिल

राज और समाज की खरी आवाज

अब तो रिमोट से ही चलती हैं सरकारें

• 5 कहानियां • दलितों के अलग मंदिर • बिकती हैं नौकरियां • नादान उम्र में सैक्स • बड़बोले फिल्मी सितारे

सरस सलिल

राज और समाज की खरी आवाज

संस्थापक
विश्वनाथ (1917-2002)

दिसंबर (प्रथम) 2014

अंक: 525

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, **कोलकाता-700016.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 111, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्राइवेट लिमिटेड, ए-36, साहिबाबाद, गाजियाबाद व दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली में मुद्रित एवं ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं—

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु., एक साल के लिए 195 रु., 2 साल के लिए 385 रु..

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

गहरी पैठ

मोदी सरकार ने मई में शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी देशों के अध्यक्षों को बुला कर सुलह और सहयोग के जो प्रयास किए थे, वे एकएक कर के बिखर रहे हैं. पाकिस्तान से तो वाक्युद्ध ही नहीं, गोलीबारी भी हो रही है और दांत तोड़ डालने की धमकियां दी जा रही हैं. बंगलादेश भी कहीं सहयोग नहीं दे रहा. नेपाल चीन को काठमांडू तक रेल लाइन बनाने की इजाजत दे रहा है. श्रीलंका ने चीनी सैनिक पनडुब्बियों को इजाजत दे दी है कि वे वहां रुक सकें.

शादीब्याह के अवसर पर साथ खानेपीने को पड़ोसी से प्रगाढ़ दोस्ती की संज्ञा देने का जो प्रयास किया गया था, वह बेकार हो गया है, क्योंकि नरेंद्र मोदी की सरकार के पैंतरों से पड़ोसी देश वैसे ही डरे हैं, जैसे कांग्रेसी सरकारों से डरे रहे हैं.

पाकिस्तान और बंगलादेश से तो हमारी अनबन में धर्म का मूल स्थान रहेगा ही. 1947 में जब भारत से पाकिस्तान अलग हुआ, तो सवाल हिंदूमुसलिम का था. पिछले 67 साल से हमारे देश की सरकारें लगभग ऐसी थीं, जो पाकिस्तान से लड़ते हुए भी हिंदूमुसलिम एकता की थोथी ही सही, दुहाई देती रही थीं. अब नरेंद्र मोदी की भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से आम पाकिस्तानी और बंगलादेशी दिल से दोस्ती कर पाएंगे, फिलहाल ऐसा संभव नहीं लगता है.

भारत के विकास में पड़ोसी देशों का बड़ा हाथ है, क्योंकि अगर हम उन की ओर से निश्चिंत नहीं रहे, तो हमें हमेशा रक्षा पर बहुत पैसा खर्च करना पड़ेगा. इन देशों के निवासियों के भारत में संबंधी हैं और आनाजाना लगा रहेगा, इसलिए हर पर्यटक पर गहरी नजर रखनी होगी, जो एक अतिरिक्त खर्च है.

ये देश भारत के लिए बड़े बाजार भी हैं. हमारे उद्योग वहां अपना सामान बेच सकते हैं और वहां का खास सामान ला कर सस्ते में बेच सकते हैं. कांग्रेसी सरकारों ने इन देशों को बाजार के लिए नहीं, लोकल वोटों के लिए इस्तेमाल करा. इंदिरा गांधी तो वर्षों विदेशी हाथ का राग अलापती रहीं, जिस का इशारा पाकिस्तान की ओर था, जबकि अगर कोई विदेशी हाथ सक्रिय था, तो उन के अपने घर में था.

नरेंद्र मोदी की सरकार अभी उदार दिख रही है, पर विदेशी इस तरह के दिखावों के बहलावों में कम आते हैं. हम चाहे जितना गाल बजा लें, देश में बदली सरकार पर दूसरे देशों की भारत के प्रति संदेह की नीति कोई कम नहीं हुई है. सशक्त भारत के लिए सहज पड़ोसी तो साथ होने ही चाहिए और विदेश मंत्रालय को कई गुना काम करना पड़ेगा, इस में संदेह नहीं है.

वैसे, शपथ ग्रहण समारोहों को राजनीति के लिए इस्तेमाल ही नहीं करना चाहिए. 9 नवंबर को नए मंत्रियों को शपथ दिलाई गई, तो सगी दोस्त शिव सेना भी नाराज रही और कांग्रेस तक चाय पीने न पहुंची. खानपान साथ करना दिखावा भर होता है.

***

उस आदमी की सजा क्या हो, जिस ने अपनी 14 साल की बेटी के बलात्कारी की हत्या कर दी? यह सवाल अब दिल्ली की अदालत के सामने खड़ा होगा. दिल्ली के खजूरी खास इलाके में इस लड़की के पड़ोसी ने पेट से ठहरा दिया था और फिर धमका कर बच्चा गिरवाने को मजबूर किया. पिता ने एक रात उस बलात्कारी को घर बुलाया और न केवल उस का गला घोंट डाला, लोहे की गरम छड़ से उस का अंग जला डाला.

वह भागा नहीं. पुलिस थाने खुद गया. पुलिस को लाश भी मिली, वह अबोध बच्ची भी, जिस का बलात्कार डाक्टरों ने हुआ बताया.

भारतीय कानून इसे आवेश में किया गया अपराध आसानी से नहीं मानता. यह हत्या घटना के कई महीने बाद हुई, सोचसमझ कर हुई, आंख के बदले आंख की प्रथा के अनुसार हुई, पर क्या गलत थी?

क्या एक पिता को अपनी बेटी की रक्षा के लिए इतना करने का हक है या नहीं या मामला अदालतों पर छोड़ दिया जाए, जहां वर्षों चलता रहे और बापबेटी हर रोज घुटते रहें? किसी भी देश का कानून ऐसा नहीं, जिस में तुरंत पिता या पुत्री को लगे कि उन के लिए सही न्याय हुआ है. अदालतें सुबूतों में दिनों, हफ्तों, महीनों नहीं, बल्कि साल लगाती हैं और बेटी बड़ी होती जाती है, कलंक का बोझ ढोती रहती है.

समाज का कानून तो यह है कि इन मामलों में लड़की को गुनाहगार मानता है. कोई न केवल उस से शादी करेगा, उस के भाईबहनों से भी न करेगा. वे मुंह भी कम न होंगे, जो कहेंगे कि पैसों की खातिर बेटी के साथ धंधा कराया जा रहा था.

इस पिता को तो सरेआम इज्जत मिलनी चाहिए. यह उस की हिम्मत है कि उस ने फांसी की चिंता करे बिना अपनी बेटी का बदला लिया. हर बदले के लिए कानून का मुंह नहीं ताकें, पुलिस की राह नहीं देखें, क्योंकि कुछ अपराध ऐसे होते हैं, जो अंदर तक घाव कर जाते हैं. इस मामले में तो पड़ोसियों तक को पता चल गया था और बलात्कारी ढीठ बन कर वहीं रहता भी रहा. समाज ने बलात्कारी को छोड़ कर अपना कायरपन व दोगलापन दिखाया. ऐसे समाज के सामने इस पिता का सम्मान करना चाहिए, ताकि समाज नीची निगाहें कर सके, मुंह छिपा सके.

अगर एक पिता को समाज, पड़ोसी से अपनी बेटी की सुरक्षा का भी भरोसा न मिल सके, तो उस समाज को पिता को हत्या करने पर भी सजा देने का हक नहीं है. ●

अब तो रिमोट से ही चलती हैं सरकारें

बीरेंद्र बरियार ज्योति

सरकारें और सियासी दल अब रिमोट से ही चल रहे हैं. कुरसी पर बैठा कोई और दिखाई देता है, पर उसे आदेश और निर्देश कहीं और से मिल रहे होते हैं. डमी सरकार और उस के डमी मुखिया को चलाने का रिमोट कंट्रोल बटन किसी और के पास होता है, जिसे वह दूर बैठा अपने मतलब और सोच के हिसाब से चलाता है.

रिमोट से चलने वाली सरकार के लिए अगर कोई अवार्ड हो, तो वह यकीनन संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के मुखिया डाक्टर मनमोहन सिंह को मिलेगा, जिन्होंने 10 साल तक बिना किसी हीलहुज्जत के कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के रिमोट से सरकार चलाई.

अपने आका के हर हुक्म को खामोशी से मानने और अमल में लाने के उन के स्वभाव की वजह से ही उन्हें 'मौन मोहन सिंह' का दर्जा मिला था. अब वैसा ही कुछ हाल के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उन की सरकार का भी है, जिन्हें नागपुर में बैठे उन के आका रिमोट से चला रहे हैं और धर्मनिरपेक्ष देश को हिंदुत्व के रंग में रंगने के अपने मकसद को खामोशी से अमल में लाने में लग गए हैं.

बिहार में नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे कर जीतनराम मांझी को डमी मुख्यमंत्री बना कर खुद सत्ता की बागडोर परदे के पीछे से थाम ली.

सरकारी सूत्रों की मानें, तो हर सरकारी फाइल पहले नीतीश कुमार की नजरों से गुजरती है, उस के बाद ही उस पर जीतनराम मांझी के दस्तखत होते हैं.

नीतीश कुमार के सरकारी आवास पर भले ही पूर्व मुख्यमंत्री का बोर्ड लग गया हो, पर सत्ता के गलियारों में उन्हें 'सुपर चीफ मिनिस्टर' कहा जा रहा है.
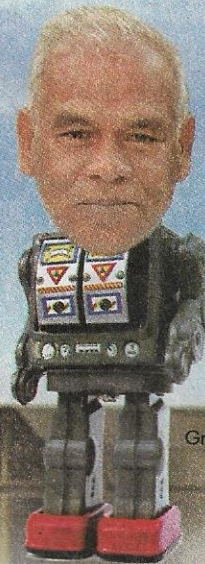
इस से पहले राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव चारा घोटाले में जब जेल गए थे, तो मुख्यमंत्री की कुरसी पर राबड़ी देवी को बैठा कर खुद जेल से ही राजपाट चलाते रहे.

उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव भले ही मुख्यमंत्री की गद्दी पर बैठे नजर आते हों, पर वे अपने पिता और समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव के 'छाया मुख्यमंत्री' ही माने जाते हैं.

रिमोट से सरकार चलाने के सब से बड़े खिलाड़ी शिव सेना के मुखिया बाला साहेब ठाकरे का तो कोई सानी ही नहीं था. वे तो सीना ठोंक कर अपनी पार्टी की सरकार के मुखिया को अपने हिसाब से ही चलाया करते थे.

साल 2014 के आम लोकसभा चुनाव को भारतीय जनता पार्टी ने भले ही नरेंद्र मोदी की अगुआई में लड़ा और जीता हो, पर उन की पूरी लड़ाई और जीत की रणनीति नागपुर में बैठे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आका ही कंट्रोल कर रहे थे.

लोकसभा की कुल 543 सीटों में से 282 सीटें जीत कर केंद्र में बहुमत की सरकार बनाने के बाद भाजपा की बोलती और घमंड को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत ने यह कह कर औकात बता दी कि भाजपा की जीत के पीछे उन के स्वयंसेवकों की दिनरात की मेहनत है.

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रिश्तों का सवाल अकसर सिर उठाता रहा है. दोनों संगठनों के नेता इस बात को खारिज करते रहे हैं कि भाजपा और उस की सरकार को नागपुर में बैठे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संगठन के आका ही चलाते रहे हैं. दोनों संगठन कुछ भी सफाई दें, पर अब यह जगजाहिर है कि भाजपा का हर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री असल में संघ का ही मुखौटा होता है.

अटल बिहारी वाजपेयी जैसे दमदार नेता भी खुद को संघ का मुखौटा बनने से नहीं रोक पाए थे. नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली नईनवेली सरकार संघ की नीतियों को सरकारी योजनाओं से जोड़ कर उसे भी जमीन पर उतारने की कवायद में लग गई है.

संघ के हिंदुत्व के नारे को नरेंद्र मोदी बड़ी ही खामोशी से हकीकत के धरातल पर उतार रहे हैं. रमजान के मौके पर इफ्तार की दावत में न जा कर और 15 अगस्त के मौके पर लाल किले से भाषण देने के दौरान गांधी टोपी के बजाय पगड़ी पहन कर मोदी संघ की सोच को ही बढ़ावा दे रहे थे.

भाजपा के सब से पहले प्रधानमंत्री

खाए जाओ खाए जाओ,
यूनाईटेड के
गुण गाए जाओ
United
UNITED
PRESSURE COOKER
United®
Pressure Cooker
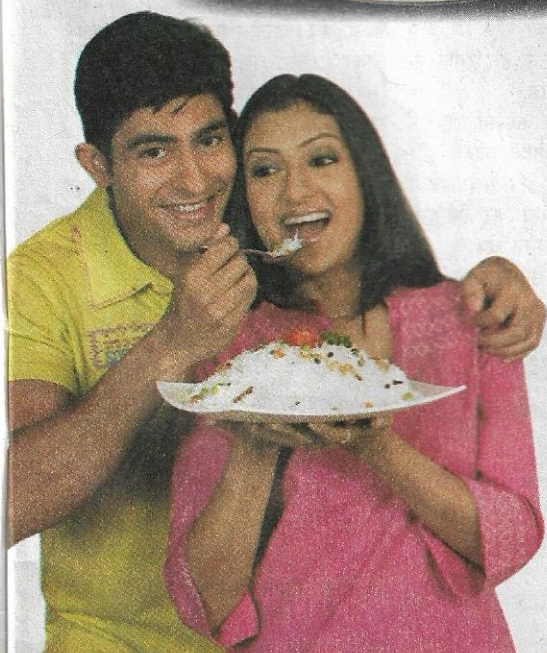
बने अटल बिहारी वाजपेयी संघ के ही स्वयंसेवक और प्रचारक रहे थे. नरेंद्र मोदी ने भी अपनी सियासी जिंदगी की शुरुआत संघ के प्रचारक के तौर पर ही की थी.

दरअसल, भाजपा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ही सियासी शाखा है और उस के कैडर में तकरीबन 60 फीसदी संघ के ही स्वयंसेवक हैं और तकरीबन 40 फीसदी संघ प्रतिनिधियों को भाजपा में अलगअलग लैवल पर रखा जाता रहा है. इस के बाद भी भाजपा और संघ किस मुंह से यह कहते रहे हैं कि दोनों को एकदूसरे से कोई लेनादेना नहीं है?

भाजपा सरकार को रिमोट से चलाने के आरोप को खारिज करते हुए संघ प्रमुख मोहन भागवत बारबार कह रहे हैं कि मोदी सरकार को संघ रिमोट के जरीए नहीं चला रहा है. सरकार को जनता का पूरा समर्थन मिला है और वह बेहतर तरीके से काम कर रही है.

जनता दल (यूनाइटेड) के सांसद रहे रंजन प्रसाद यादव कहते हैं कि आखिर संघ को बारबार यह सफाई देने की जरूरत क्यों पड़ती है कि भाजपा सरकार को चलाने में उस की कोई दखलअंदाजी नहीं है? सब को पता है कि बगैर आग के धुआं नहीं उठता है.

केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री जहां संघ के रिमोट से ही हिलतेडुलते हैं, वहीं सरकार के मंत्रियों का रिमोट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने हाथ में पकड़ रखा है. उन्होंने अपने हर मंत्री को टाइम बाउंड टास्क दे रखा है और किसी को भी अपनी पसंद का प्राइवेट सैक्रेटरी रखने की छूट नहीं दी है.

इस से पहले सांसद व मंत्री अपनी पसंद के पीएस रखते थे, जिन में से ज्यादातर उन के रिश्तेदार और दोस्त ही होते थे. इस से मंत्री को 'ऊपर की कमाई' में काफी आसानी होती थी. नरेंद्र मोदी हर मंत्री के पीएस को रखने और उन की निगरानी अपने लैवल पर ही कर रहे हैं, जिस से उन के ज्यादातर मंत्री हताश और निराश हैं.

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले कांग्रेस की अगुआई वाली संप्रग सरकार को सोनिया गांधी ने रिमोट के जरीए 10 सालों तक चलाने का रिकौर्ड बनाया था. प्रधानमंत्री डाक्टर मनमोहन सिंह सिर झुका कर और आंख, कान व मुंह बंद कर सोनिया गांधी के हर आदेश को मानते रहे.

साल 2005 से ले कर मई, 2014 तक डाक्टर मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री की कुरसी पर बैठा कर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी परदे के पीछे से सरकार चलाते रहे. कौमनवेल्थ गेम घोटाला, 2 जी और 3 जी घोटाला, कोल ब्लौक आवंटन घोटाला, सांसदों की खरीदफरोख्त घोटाला जैसे एक के बाद दूसरे बड़े घोटालों में कांग्रेस की अगुआई वाली संप्रग सरकार फंसती रही और इस का सारा ठीकरा प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सिर पर ही फोड़ा जाता रहा.

डाक्टर मनमोहन सिंह चुपचाप सरकार के तमाम गुनाहों को अपने सिर पर उठा कर उस के बोझ से दबते गए और सोनिया व राहुल गांधी पर इस की रत्तीभर भी आंच नहीं पहुंची.

घोटालों के बोझ ने मनमोहन सिंह को इस कदर पस्त कर दिया था कि साल 2014 के आम चुनाव के काफी पहले ही उन्होंने तीसरी दफा प्रधानमंत्री बनने से इनकार कर दिया था.

बिहार में ऐसी ही सरकार पर भाजपा नेता सुशील कुमार मोदी कहते हैं कि नीतीश कुमार जीतनराम मांझी को मुख्यमंत्री बना कर रिमोट से बिहार सरकार चला रहे हैं, जिस से सरकार का जनसरोकार से नाता टूट गया है.

गरीबों को 2 रुपए किलो गेहूं और 3 रुपए किलो चावल देने की योजना, विधवाओं और विकलांगों को पेंशन देने की योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा बीमा योजना जैसी दर्जनों योजनाओं का काम ठप है और सरकार खुद कोई फैसला नहीं ले पा रही है.

मांझी बारबार सफाई देते फिरते हैं कि वे डमी मुख्यमंत्री नहीं हैं और सरकार के काम में नीतीश कुमार का कोई दखल ही नहीं है.

नीतीश कुमार की कठपुतली कहे जाने के आरोप पर जीतनराम मांझी कहते हैं, "मैं नीतीश कुमार का करीबी हूं, भरोसेमंद हूं, लेकिन उन का 'यस मैन' नहीं हूं.

"मैं दलित परिवार से हूं और अब यह सोच बदल गई है कि दलित पिछलग्गू बन कर ही रह सकता है. नीतीश कुमार और शरद यादव समेत पार्टी के तमाम नेताओं और कार्यकर्ताओं की मदद से मैं सरकार चला रहा हूं."

इंटरनैशनल लैवल पर भी रिमोट भारी

इंटरनैशनल लैवल पर भी कई सरकारें रिमोट से चलती रही हैं. सब से ताकतवर रिमोट कंट्रोल अमेरिका के पास ही है, जो सैकड़ोंहजारों किलोमीटर दूर देशों तक आसानी से काम करता है. इसी ताकत के बूते समूची दुनिया पर धौंसपट्टी जमाना अमेरिका की आदत बन चुकी है.

भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान में कभी अमेरिका, तो कभी चीन के रिमोट से सरकारें चलती रही हैं. वैसे तो पाकिस्तान में प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भले ही कोई हो, पर वहां की सरकारें तो वहां की सेना की धौंस और धमकी से ही चलती रही हैं. कई ऐसी मिसालें हैं कि अगर कोई सरकार सेना की मरजी के खिलाफ कोई कदम उठाता था, तो उस का तख्ता पलट दिया जाता था. जियाउल हक, बेनजीर भुट्टो, नवाज शरीफ, परवेज मुशर्रफ, आसिफ अली जरदारी वगैरह को जमीन पर पटकने का काम वहां की सेना करती रही है.

फिलहाल तो नवाज शरीफ सरकार पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं और पाकिस्तानी सेना उन के विरोधी इमरान खान के आंदोलन को पीछे से समर्थन दे रही है. इस से नवाज शरीफ की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं.

भारत से सटा देश नेपाल भी भारत और चीन के रिमोट से चलता रहा है. जिस देश ने उसे ज्यादा माली मदद दी, उसी के इशारों पर नाचना नेपाल की आदत बन चुकी है.

साल 1990 में बिहार के मुख्यमंत्री बने लालू प्रसाद यादव जब साल 1996 में 950 करोड़ रुपए के चारा घोटाला मामले में जेल गए, तो उन्होंने रिमोट से चलने वाली सरकार का खेल खेला था.

जेल जाने से पहले उन्होंने अपनी पत्नी राबड़ी देवी को रसोई से निकाल कर सीधे मुख्यमंत्री की सीट पर बैठा दिया और खुद जेल से ही रिमोट के जरीए सरकार चलाते रहे.

साल 1996 से ले कर साल 2005 तक लालू प्रसाद यादव जेल और मुकदमों में उलझे रहे और राबड़ी देवी के कंधे पर बंदूक रख कर सियासी मैदान में निशानेबाजी करते रहे.

महाराष्ट्र में शिव सेना सुप्रीमो बाल ठाकरे रिमोट से सरकार चलाने के सब से माहिर खिलाड़ी माने जाते थे.

शिव सेना की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री की कुरसी पर भले ही मनोहर जोशी, नारायण राणे वगैरह बैठे नजर आते थे, पर उन सब की डोर बाल ठाकरे के हाथों में रहती थी.

साल 1995 से ले कर साल 1999 तक महाराष्ट्र में शिव सेना और भाजपा के गठबंधन वाली सरकार के दौरान बाल ठाकरे पर कई बार यह आरोप लगे कि वे अपने घर 'मातोश्री' में बैठ कर रिमोट से सरकार चलाते थे.

अपनी किसी जिद या सोच को अमल में लाने के लिए वे अपनी सरकार के मुख्यमंत्री और मंत्रियों को सलाह या निर्देश नहीं देते थे, बल्कि सीधे शिव सैनिकों को आदेश दे देते थे. चाहे पाकिस्तान के भारत में क्रिकेट खेलने से रोकने के लिए ठाकरे ने केंद्र या राज्य से बात करने के बजाय शिव सैनिकों से कह कर मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में पिच को खुदवा दिया.

'वैलेंटाइन डे' मनाना उन्हें नागवार गुजरा, तो उस पर रोक लगाने के लिए सरकार को सलाह देने के बजाय प्रेमीप्रेमिकाओं को सबक सिखाने के लिए शिव सैनिकों को फरमान जारी कर दिया. उस के बाद तो शिव सैनिकों ने प्रेमीप्रेमिकाओं को ढूंढ़ढूंढ़ कर उन की धुनाई कर डाली और अपनी ही सरकार की फजीहत करा डाली. ●
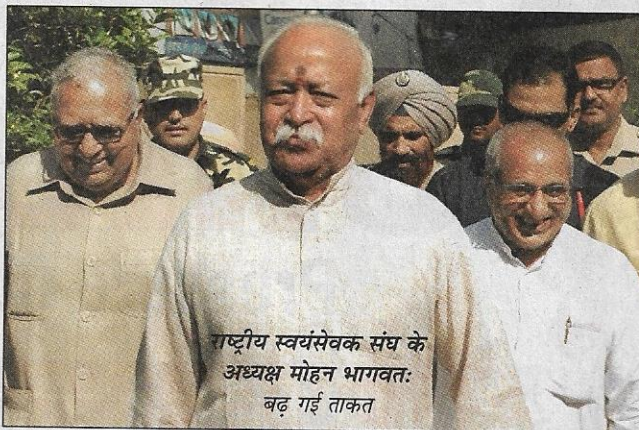
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अध्यक्ष मोहन भागवत: बढ़ गई ताकत

- रूसी
- रूखापन
- झड़ते बाल
- दोमुंहे बाल
- असमय सफेदी

बालों की
Complete Care
के लिए पूरे देश ने अपनाया

मेरा नाम कल्पना नागर है। सभी स्त्रियों की तरह मुझे भी खुले, सुलझे बाल बहुत भाते हैं। पिछले डेढ़-दो सालों से मेरे बाल बहुत झड़ते जा रहे थे। मुझे मेरी बेटी की टीचर ने आयुर्वेदिक केश किंग तेल, कैप्सूल एवं शैम्पू के बारे में बताया। केश किंग के नियमित इस्तेमाल से मेरे बालों की समस्या बिल्कुल खत्म हो चुकी है।

यह चित्र है श्रीमती आशा शर्मा का, इन्हें पिछले तीन-चार सालों से बालों के टूटने व झड़ने की समस्या थी। केश किंग ट्रीटमेंट के बारें में पता चलने पर इन्होंने दो केश किंग कैप्सूल सुबह शाम व केश किंग तेल का रोज़ाना प्रयोग किया। इससे इन्हें गज़ब के परिणाम मिले। आज इनके स्वस्थ बालों की लम्बाई 5 फुट 7 इंच है।

यह चित्र है श्रीमती जयश्री विजय राणे, मुम्बई से, जोकि कई हेयरलॉस ट्रीटमेंट ट्राई कर चुकीं थी। एक प्रसिद्ध अखबार से इन्हें आयुर्वेदिक केश किंग के बारे में पता चला। इसके 20-25 दिनों के नियमित प्रयोग से इन्हें काफी फायदा हुआ। अब वे केवल आयुर्वेदिक केश किंग तेल का ही इस्तेमाल करती हैं।

यह चित्र है श्रीमती पायल प्रजापत का, इन्होंने पत्र लिखकर बताया कि पिछले कुछ सालों से इन्हें बालों के टूटने-झड़ने और दोमुहे बालों की गंभीर समस्या थी। इन्होंने हफ्ते में तीन बार आयुर्वेदिक केश किंग तेल की हल्के हाथों से बालों में मसाज की। आज इनके बाल पहले से अधिक मज़बूत, स्वस्थ व घने है।

यह चित्र है श्रीमती सीता देवी का, जिन्हें पिछले कुछ सालों से बालों के झड़ने व रूसी की समस्या थी। इन्हें प्रसिद्ध टीवी चैनल आज तक से आयुर्वेदिक केश किंग के बारे में पता चला। केश किंग के नियमित प्रयोग से इन्हें अपने बालों की समस्याओं से छुटकारा मिला। आज इनके बालों की लम्बाई 5 फुट 6 इंच है।

मेरा भरोसा,
मेरा विश्वास

20% EXTRA
केश किंग
Kesh King
20% EXTRA

Helpline: 0171-3055155
www.keshking.com

मध्य प्रदेश में भोपाल के सिंधी बहुल इलाके बैरागढ़ में बने वाल्मीकि मंदिर से एक छड़ी यात्रा निकाली गई थी, जिस में वाल्मीकि समाज के सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया था.

जलसे के मुख्य अतिथि इस इलाके के भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामेश्वर शर्मा थे, जिन्होंने वाल्मीकि समाज के गुरु गोरखनाथ महाराज की जम कर तारीफ करते हुए ऐलान किया था कि इस मंदिर की मरम्मत के लिए वे विधायक निधि से 3 लाख रुपए देंगे. सवर्णों के मंदिरों को 30 लाख रुपए से 3 करोड़ रुपए तक आम मिलते रहते हैं.

सियासत के लिहाज से इस बात और ऐलान के माने अलग थे. दरअसल, रामेश्वर शर्मा पढ़ेलिखे नेता हैं और उन की इमेज एक कट्टरवादी हिंदू नेता की है. लिहाजा, वे बेहतर जानतेसमझते हैं कि दलितों के मंदिर अलग होते हैं और दलितों को अपने मंदिरों में ही जा कर पूजापाठ जैसे काम करने चाहिए, जिस से ऊंची जाति वालों के आलीशान मंदिरों में जाने की उन की ख्वाहिश सिर न उठाए. वे दलित ही रहें और इस तरह के दान के ऐलान पर खुश होते हुए तालियां पीटते रहें.

क्या है साजिश

जो बात भोपाल में एक भाजपा विधायक द्वारा इशारों में कही गई, उसे

भारत भूषण श्रीवास्तव

हिंदुओं के सब से बड़े धार्मिक ओहदे पर बैठने वाले पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद ने खुले तौर पर कहा कि दलितों के मंदिरों में जाने पर रोक ठीक है और हिंदू धर्मशास्त्रों के मुताबिक है.

इत्तिफाक से यह वह वक्त था, जब बिहार के मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी के दलित होने के चलते एक मंदिर में जाने के बाद उस की धुलाई को ले कर खासा बवाल मचा हुआ था.

शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद के बयान पर कोई हाहाकार नहीं मचा, धर्म के नाम पर सड़कों पर खूनखराबा नहीं हुआ और न ही भगवा खेमा तो दूर की बात है कांग्रेसी या बसपा जैसी दलित हिमायती पार्टियों ने एतराज जताया.

इन की चुप्पी के माने साफ हैं कि अब कोई दलितों की धर्म से ताल्लुक रखती लड़ाई नहीं लड़ना चाहता. बात अच्छी सिर्फ इस लिहाज से है कि इस से दलित तबके का कुछ भी भला नहीं होने वाला.

अगर दलितों के हक और हितों पर मुंह बंद रखा गया, तो एक बार फिर इन की सामाजिक हालत उस वर्ण व्यवस्था सरीखी हो जाएगी, जिस में इन को लताड़ने, गाली देने और दूर रखने की बातें बढ़चढ़ कर की गई हैं.

ऊंची जाति वाले चाहते हैं कि दलितों के मंदिर अलग ही हों और इस बाबत कैसीकैसी साजिश रच रहे हैं, इसे कहीं भी महसूस किया जा सकता है.

मंदिर एक ऐसी जगह है, जिस के बारे में आम राय यह है कि वहां सब बराबर होते हैं, लेकिन सचाई ठीक इस के उलट है और जीतनराम मांझी का मामला गवाह है कि भगवान का दरबार तो बनाया ही जाता है छुआछूत और भेदभाव चलाने के लिए. इस समाज में किसी बराबरी की उम्मीद न रखी जाए, जिस की बुनियाद ही इन पर रखी गई है.

शुरू से ही दलितों को अपनी बस्तियों में अलग मंदिर बनाने दिए गए, जिस से वे पूजापाठ में उलझे पंडों की सेवा में लगे रहें. उन से दक्षिणा तो ली जाती है, पर इस बात का ध्यान रखा जाता है और एहसास भी कराया जाता है कि इस लेनदेन के वक्त उन्हें छुआ भी नहीं जा रहा, लेकिन लक्ष्मी यानी रुपएपैसे पर यह बात लागू नहीं होती.

अब दलित मंदिरों का चलन और तादाद तेजी से बढ़ रही है, क्योंकि उन के पास अच्छाखासा पैसा आ गया है. इस पैसे को धर्म के नाम पर झटकने के लिए खुद दलितों के पंडों और ब्राह्मणों में होड़ सी मची हुई है.

दलितों को जाति के नाम पर दुत्कारा जाता है और सताया भी जाता है, जिस से वे उस से छुटकारा पाने की जल्दबाजी और बेचैनी में और ज्यादा से ज्यादा पूजापाठ करते हुए दानदक्षिणा दें.

अकेले भोपाल में वाल्मीकि समाज के 1-2 नहीं, बल्कि 5 मंदिर हैं और दूसरी छोटी जाति वालों के मंदिर भी इन में जोड़ दिए जाएं, तो आंकड़ा 50 के ऊपर पहुंचता है.

इन मंदिरों का मुख्य देवता या मूर्ति उसी जाति के देवता की होती है और शिव, हनुमान, दुर्गा वगैरह बगल से सजा कर रखे जाते हैं.

दलित मंदिरों में सवर्ण कभी नहीं जाते, उलटे दूर से ही मुंह टेढ़ा कर कहते हैं कि ये तो निचली जाति वालों के मंदिर हैं.

बात अकेले मंदिर की नहीं, बल्कि बाबाओं की भी है. शहर में जब किसी नामी ब्रांडेड बाबा का प्रवचन होता है, तो वहां ज्यादातर ऊंची जाति वाले ही दिखते हैं. छोटी जाति वालों के बाबा अब पैदा होना शुरू हुए हैं, जो अपने नाम के आगेपीछे संत, बाबा, गुरु और नंद, सरस्वती या शास्त्री लगा कर दुकान चमकाते हैं.

प्रवचन इन के भी होते हैं, पर जलसे सवर्णों के बाबाओं सरीखे भव्य और खर्चीले नहीं होते.

दलितों को मशवरा यह दिया जाता है कि जाति को ले कर निराश होने की जरूरत

नहीं, अभी कई और जन्म बाकी हैं. जितना दानपुण्य और पूजापाठ करोगे, उतनी ही कर्मों की गति सुधरेगी और फिर तुम किसी ऊंची जाति वाले के यहां पैदा हो कर सुख भोगते रहोगे.

एक तरह से ये टोटके और धार्मिक जलसे इस बाबत हैं कि दलित धर्म के मकड़जाल में फंसे रहें. इस से आजाद होने की न सोचें और न ही हिंदू धर्म की ज्यादतियों से घबरा कर बौद्ध, ईसाई या मुसलिम बनें, नहीं तो मुफ्त का एक ग्राहक हाथ से चला जाएगा.

इन की कोशिशें कम नहीं

बीते 10 सालों में दलितों के मंदिरों की हालत सुधरने लगी है और कुछ तो आलीशान मंदिरों से चमचमाने लगे हैं. इन मंदिरों से एक बड़ा फायदा ऊंची जाति वालों को यह है कि कोई दलित उन के मंदिरों में आ कर बराबरी से खड़ा नहीं होता. इस से वे उसे धोने और बाद में शुद्धि करने से बच जाते हैं. साथ ही, खुद के ऊंची जाति वाले होने का गुमान भी बना रहता है.

दलितों के तमाम सामाजिक संगठन अब समाज या जाति के भले के लिए नहीं, बल्कि धरमकरम के कामों में ज्यादा लगे हैं, क्योंकि इस से खासा पैसा मिलता है और मंदिर बनाने के नाम पर नकदी इकट्ठा हो जाती है.

हैरत की बात यह है कि इस में ऊंची जाति वाले भी पैसा देते हैं. नाम न छापने की शर्त पर भोपाल के एक पंडित का कहना है कि यह एक तरह से हिंदुओं की तादाद और ताकत दिखाने का टोटका है. पहले दलितों को पैसा कम मिलता था. लिहाजा, वे एक वक्त की रोटी के लिए ऊंची जाति वालों की जूठन खाते थे. अब यह रिवाज कम हो चला है, इसलिए नकद पैसा दे कर काम चलाया जा रहा है.

रोजी और रोजगार जैसी अहम बातें इस पंडित की बातों से समझ आती हैं, जिस का मतलब यह है कि अब दलित पहले की तरह भूखा नहीं मर रहा, उलटे कम तादाद में ही सही पैसे वाला हो रहा है. उस के बच्चे महंगे स्कूलों में पढ़ने लगे हैं, इसलिए उसे मंदिर के जरीए इस तरह घेरा जा रहा है कि वह धार्मिक भी रहे और अछूत भी बना रहे.

इस बाबत कोई भाजपा विधायक किसी वाल्मीकि मंदिर के लिए 3 लाख रुपए दे, तो बात कतई हैरत की नहीं, बल्कि यह तो वोट बैंक एजेंडे का हिस्सा है कि दलितों को रामनाम में उलझाए रखो, इसी में सब का भला है.

कांग्रेस ने भी खादी की आड़ में यही किया था और चरखे को देवता बना कर पिछड़ों को खुश किया था. गांधी ने हरिजनों को भजनों के नाम पर बहकाया था.

दलित भी हैं जिम्मेदार

जीतनराम मांझी की तरह तमाम दलितों की एकलौती ख्वाहिश ऊंची जाति वालों के मंदिर में जाने की रहती है, तो इस के जिम्मेदार भी वही हैं, जो बाद में पंडों की दुत्कार खा कर तिलमिलाते रहते हैं और बजाय अपने मंदिर के भगवान के पास जा कर जाति का रोना रो कर किस्मत को कोसते हुए चुप हो जाते हैं.

सियासत के जरीए भी दलितों का भला नहीं होना. यह बात कई दफा साबित हो चुकी है, क्योंकि न तो वे एक हैं और न ही उन की गिनती काफी है. पिछड़े भी उन के साथ चलना नहीं चाहते. ताजा उदाहरण मायावती और रामविलास पासवान हैं. मायावती ब्राह्मणों का पल्लू पकड़ कर तर नहीं पाईं, उलटे डूब गईं और रामविलास पासवान ऊंची जाति वालों की गोद में बैठ दिल्ली जा पहुंचे.

दरअसल, भगवान और पंडों के सामने अपनी बदहाली का रोना रोते रहने वाले दलित खुद ही अपने दुश्मन बने हुए हैं, जो बढ़चढ़ कर धार्मिक जलसे करते हैं, उन में वक्त व पैसा बरबाद करते हैं और अखबार में फोटो छपवा कर यह सोचते हुए खुश हो जाते हैं कि हम अब ऊंची जाति वालों के बराबर आ गए हैं.

ऊंची जाति में पैदा होने के लिए जब कुछ जन्म और इंतजार करना ही है, तो यह जन्म बेवजह बरबाद करने की जिद खुद दलितों को महंगी पड़ रही है, जो जैसेतैसे गरीबी की गुफा के बाहर आ रहे हैं, पर बाहर उस से बड़ी धर्म की आफत मुंहबाए रहती है, जो उन में तीर्थयात्राएं कराती है, व्रतउपवास कराती है और टोनेटोटकों के नए तरीके भी सिखाती है.

ऐसे में जरूरी है कि दलित खुद इस साजिश को समझें और अपनी सोच खुली रखें कि जो पूछपरख दिख रही है, वह पैसों की वजह से है, तादाद की वजह से है और उस में भी भेदभाव और छुआछूत है, जिस से वे धर्म या मंदिरों के जरीए कतई छुटकारा नहीं पा सकते. तालीम ही एकलौता जरीए है, जो उन्हें इज्जतदार मुकाम और बराबरी का दर्जा दिला सकती है. ●

बिकती हैं नौकरियां बोलो खरीदोगे

मदन

राजस्थान : 3 बड़े इम्तिहान रद्द. प्रदेश में डेढ़ लाख से ज्यादा नौकरियां भरती में गड़बड़ी व भ्रष्टाचार की वजह से लटकी हुई हैं. इन में ज्यादातर मामले या तो कोर्ट में हैं या फिर इम्तिहान रद्द कर दिए गए हैं.

ताजा मामले राजस्थान लोक सेवा आयोग के सब से बड़े इम्तिहान आरएएस, प्री मैडिकल और वाणिज्य व्याख्याता के हैं. महज एक हफ्ते में ही 3 बड़े इम्तिहान भ्रष्टाचार की वजह से रद्द कर दिए गए.

मध्य प्रदेश : भरतियों का महाघोटाला. मध्य प्रदेश के व्यापम घोटाले ने तो भरतियों में गड़बड़ी की सारी हदें पार कर दीं. सरकार ने मामले की तह में जाने के बजाय इसे दबाने की कोशिश की.

यह घोटाला साल 2008 में राजधानी भोपाल के शाहपुरा थाने में डाटा ऐंट्री औपरेटर के रूप में सामने आया था. प्रदेश के दूसरे थानों में 295 मामले व्यापम की भरती व इम्तिहानों में हुए फर्जीवाड़े पर दर्ज हुए.

जांच ने रफ्तार उस समय पकड़ी, जब हाईकोर्ट ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर के एसआईटी को बनाया. अब बड़े पैमाने पर धरपकड़ व पूछताछ हो रही है.

एसटीएफ महज पीएमटी मामले में ही अब तक करीबन 5 सौ आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है. प्रीपीजी मामले में 18, नापतौल निरीक्षक मामले में 13, दुग्ध संघ भरती इम्तिहान में 9, एसआई भरती इम्तिहान में 33, पुलिस आरक्षक 2012 मामले में 43, संविदाशाला शिक्षा मामले में 73 आरोपियों को एसटीएफ गिरफ्तार कर चुकी है.

छत्तीसगढ़ : अधर में लटकी पीएमटी घोटाले की जांच. व्यावसायिक परीक्षा मंडल और लोक सेवा आयोग में गड़बड़ियों के चलते इन की इमेज दागदार है. साल 2011 में हुए पीएमटी घोटाले की जांच अभी तक पूरी नहीं हुई है. रिजल्ट में देरी व गड़बड़ियों की वजह से पीएससी के लिए विश्वसनीयता का संकट खड़ा हो गया है.

गौरतलब है कि 19 जून, 2011 में व्यापम से आयोजित पीएमटी का परचा इम्तिहान से ठीक एक दिन पहले 18 जून को लीक हो गया था. आननफानन हाई लैवल जांच कमेटी के जरीए जांच की खानापूरी भी कराई गई और समय बीतने के साथ ही जांच भी बंद कर दी गई.

हरियाणा : भरती घोटाले ने पहुंचाया जेल. अदालत ने शिक्षक भरती घोटाले के मामले में हरियाणा के मुख्यमंत्री रह चुके ओम प्रकाश चौटाला समेत 4 दर्जन लोगों को कुसूरवार माना और जेल भेजा. उन्हें गलत तरीके से 3,206 शिक्षकों की भरती करने का कुसूरवार माना गया.

कर्नाटक : कठघरे में आयोग. कर्नाटक लोक सेवा आयोग के 6 अफसरों के खिलाफ मई महीने में कैश फोर जौब स्कैम में आरोपपत्र दाखिल किया गया है. पिछले साल ग्रुप ए और ग्रुप बी अफसरों की भरती में भारी गड़बड़ी हुई थी. इस भरती में आयोग के सदस्यों ने अभ्यर्थियों से लाखों रुपए की रिश्वत ले कर भरतियां की थीं.

देशभर में हर रोज किसी न किसी भरती में गड़बड़ी व फर्जीवाड़े के मामले सामने आ रहे हैं. कहीं पेपर लीक, तो कहीं बाद में अंकों के साथ छेड़छाड़. ऐसे में ठगे से रह जाते हैं बेचारे वे अभ्यर्थी, जो काबिल तो हैं, लेकिन उन के पास पैसा व असरदार लोगों तक पहुंच नहीं है.

सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में भारतीयों के लिए होने वाले इम्तिहानों में गड़बड़ी के पीछे सब से बड़ी वजह सिस्टम में गहराई तक पैठ जमा चुका भ्रष्टाचार है. नौकरियों में लगने के लिए सरासर सौदे हो रहे हैं.

सरकारी तंत्र में आने की लालसा और उस की आड़ में भ्रष्टाचार कर पैसा बटोरने की चाह रखने वाले लोग सौदा तय करने को तैयार भी हैं.

आजकल बड़ीबड़ी साख वाले इम्तिहानों में भी फर्जीवाड़ा होना आम बात है. एकाध मामले को छोड़ कर सिस्टम में जो लोग घुसे हुए हैं, वे पकड़ में ही नहीं आते. पैसे के बल पर परचे खरीदे जाते हैं और इंटरव्यू में सैटिंगबाज अभ्यर्थी पास भी हो जाते हैं.

सिस्टम में गहरी पैठ

सरकारी नौकरी की चाह में लोग किसी भी तरह से सिस्टम में घुस जाना चाहते हैं. रिश्वत के रास्ते सिस्टम में आ कर ये लोग कैसी गवर्नैंस देंगे, यह हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं. बदले हुए दौर में सरकार भले ही तकनीक का इस्तेमाल बढ़ा रही हो, लेकिन सिस्टम का रवैया वही पुराने ढर्रे का है.

भ्रष्टाचार से घिरे सरकारी तंत्र की यह सोच समाज में भी आ गई है. इस ने नई पीढ़ी के बच्चों को पूरी तरह से जकड़ लिया है. वे पढ़नेसमझने के बजाय परचा ढूंढ़ने की फिराक में रहते हैं.

पेपर लीक करने वाले गिरोह के सरगना अमृतलाल मीणा ने पिछले 5 साल में कई प्रतियोगी इम्तिहानों में सौ से ज्यादा लोगों से लाखों रुपए ले कर उन्हें पेपर दिलवाए जाने की बात कबूल की है. यह काम करने के लिए साल 2009 में उस का संपर्क पेपर देने वाले आरपीएससी के 3 अफसरों से हो गया था, तब से ही वह यह काम कर रहा है.

अमृतलाल मीणा ने पूछताछ में खुलासा किया है कि इन पेपरों के जरीए 80 से ज्यादा लोग अफसर भी बन गए हैं.

बदलें पुराना तौरतरीका

राजस्थान यूनिवर्सिटी के कुलपति रह चुके केएल कमल कहते हैं, "रटंतनुमा इम्तिहान की वजह से ही इस क्षेत्र में फर्जीवाड़ा व भ्रष्टाचार बढ़ रहा है. सिस्टम का जोर इम्तिहान देने वालों की समझ पर नहीं, बस उन की रटने की ताकत पर ज्यादा है, जबकि कभी भी अंकों से वास्तविक प्रतिभाएं नहीं तलाशी जा सकतीं.

"इस के लिए इम्तिहान देने वाले की सोचसमझ का इम्तिहान लेना जरूरी है, ताकि उन की बुद्धिमता को नापा जा सके. जब तक इम्तिहानों के लिए किताबों और अंकों का जोर रहेगा, इस तरह की गड़बड़ चलती रहेगी. इन रटने वाले इम्तिहानों ने बच्चों के दिमाग को कैद कर दिया है."

गौरतलब है कि सभी बच्चे एकजैसे नहीं हो सकते, तो उन का इम्तिहान एकजैसे सवालों पर आधारित क्यों हो? कम से कम ऊंचे ओहदे की सरकारी नौकरी में भरती पर अंकों के बजाय अभ्यर्थियों की लीडरशिप स्किल देखी जाए, उन की समझ व समस्याओं से निबटने की क्षमता को आंका जाए. ●

नसबंदी

देवेंद्र कुमार मिश्रा

इस समय सरकार आबादी को रोकने की कोशिश में इतना तेजी से काम कर रही है कि कलक्टर ने स्वास्थ्य महकमे के अलावा खाद्य महकमे और पटवारियों तक को टारगेट दिया है कि नसबंदी के लिए कम से कम सौ लोग लाने ही होंगे, वरना नौकरी खतरे में पड़ सकती है.

जो पटवारी न तो घर पर मिलता था और न ही दफ्तर में, अब यह कहता हुआ घरघर घूम रहा था, "एक नसबंदी के बदले 15 सौ रुपए सरकार की तरफ से और एक हजार रुपए हमारी तरफ से."

राशन की दुकान, जो कभी खुली नहीं मिलती थी, उस का मालिक हाथ जोड़े लोगों के घर जा कर कहता है कि भाई साहब, राशनकार्ड, गरीबी रेखा कार्ड, हजार रुपए, राशनपानी सब मिलेगा. बस, एक नस की नाकाबंदी करवा लो. अब हम पर तरस खाओ.

गिरधारी का एक दोस्त, जिसे नसबंदी कराने का टारगेट मिला हुआ था, से उन्होंने पूछा, "क्यों भाई, कितनों की प्रोडक्शन लाइन कटवा चुके हो... मेरा मतलब है कि कितनों की नसबंदी करवा चुके हो?"

"क्या बताएं यार, हम अपनी जेब से पैसा दे रहे हैं, अपने महकमे से मिलने वाली सहूलियतें भी दे रहे हैं, फिर भी हमारा टारगेट पूरा नहीं हो रहा है.

"जिन के एक बेटी है, उन्हें एक बेटे की लालसा है. वे कहते हैं कि अभी नहीं. अभी तो एक ही है. जिन के यहां 3 या 3 से ज्यादा हैं, उन पर यह सरकारी योजना लागू नहीं है.

"इंदिरा गांधी के राज में तो हमारे दादाजी ने कुंआरों से ले कर बूढ़ों तक की नसबंदी कर टारगेट पूरा कर दिया था. उन्हें सरकार की तरफ से इनाम भी मिला था. लेकिन अब जनता जाग गई है. उस के साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते. कैसे पूरा होगा सरकारी टारगेट?"

गिरधारी ने कहा, "भाई, चिंता क्यों करते हो? गरीबों की नसबंदी करो. वे करवा लेंगे. 25 सौ रुपए में महीनेभर बैठ कर खाएंगे. तुम गरीबों से भी ज्यादा गरीबों को तलाश करो. उन में भी जो नशाखोर हैं, उन से बात करो."

तो एक शराबी से बात की गई. उस के 2 बेटियां थीं. उसे समझाया गया कि देखो, नसबंदी करवा लो. 25 सौ रुपए मिलेंगे. जीभर के शराब पीना और नाली में लोटना.

शराबी ने कहा, "बधिया कर के सांड़ को बैल बना रहे हो."

गिरधारी के दोस्त ने उसे समझाया, "नसबंदी से आदमी नामर्द नहीं होता. और फिर 25 सौ रुपए के साथ प्रैशर कुकर, गरीबी रेखा का कार्ड, बेटियों को पढ़ाई की सहूलियतें मिलेंगी. और भी ढेरों फायदे."

उस शराबी की मजदूर पत्नी ने ये बातें सुन कर कहा, "हो तो गई 2 औलादें. करवा क्यों नहीं लेते? तुम्हारी नसबंदी से कम से कम एक महीने आराम से घर का खर्च तो चलेगा."

शराबी को अपनी पत्नी की बात अच्छी लगी, फिर भी उस ने कहा, "मेरी बीवी की कर दो."

दोस्त ने उसे समझाया, "घर के काम और बच्चों की देखभाल कौन करेगा... अगर हमारा टारगेट पूरा नहीं हुआ, तो इन की भी कर देंगे. लेकिन पहले तुम चलो मेरे भाई. एक घंटे के अंदर सब हो जाएगा."

शराबी की पत्नी ने कहा, "मैं साथ चलूंगी, नहीं तो यह शराब में सारे पैसे उड़ा देगा. मेरे मर्द की चोखी कमाई पर पहला हक मेरा है."

गिरधारी ने कहा, "यह तो तुम दोनों के आपस की बात है. पहले चलो तो सही."

जिन लोगों को टारगेट पूरा करने का ठेका दिया गया था, वे अपनेअपने सांड़ों को, माफ करना मर्दों को ले कर चल पड़े सरकारी स्वास्थ्य के कैंप में. बहुत से आदमी जमा थे. नाम, पता, फोटो, बच्चों के जन्म प्रमाणपत्र, पत्नी का फोटो लिए बैठे थे.

नसबंदी कराने वाले आपस में बतिया रहे थे.

एक ने पूछा, "क्यों कर रहे हैं नसबंदी?"

दूसरे ने समझाया, "देश की आबादी न बढ़े, इसलिए..."

उस की बात सुन कर पहले वाले ने कहा, "अच्छा, अब 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाने की जरूरत नहीं. नसबंदी करवा लो, हो गया 'इंकलाब जिंदाबाद'. हमें क्या पता था कि हमारा इंकलाब इस जगह छिपा है, नहीं तो 1947 के पहले ही करवा कर अंगरेज भगा दिए होते."

"तब तुम पैदा भी नहीं हुए थे. अपनी उम्र देखी है. बात करता है."

"तो अब किस के लिए इंकलाब लाना है? किस को भगाना है?"

"अपने लिए, देश के लिए."

"अच्छा तो करवा लेते हैं 'इंकलाब जिंदाबाद'. हम वैसे भी देशभक्त आदमी हैं. इंकलाब कर के ही जाएंगे."

भीड़ में 2 और आदमी बैठ कर बातें कर रहे थे.

"कैसे करते हैं यह नसबंदी? कुछ मालूम है. कहीं गलती से कुछ और न काट दें. इन सरकारी डाक्टरों का कोई भरोसा नहीं है."

दूसरे ने समझाया, "अरे, नहींनहीं. अगर डाक्टर ने गलती की, तो गई उस की नौकरी."

पहला बोला, "अरे, तुम्हें डाक्टर की नौकरी की पड़ी है, लेकिन हमारा कुछ गलत कट गया, तो हम तो गए मर्दों की बिरादरी से. डाक्टर का क्या है? नौकरी गई तो प्राइवेट प्रैक्टिस कर लेगा. हम क्या करेंगे?"

उन की बातें सुन कर उन्हें लाया खाद्य महकमे का मुलाजिम घबरा गया. उसे लगा कि अगर यह आदमी बहक गया, तो गया बकरा हाथ से. टारगेट अधूरा, नौकरी खतरे में.

उस ने आ कर समझाया, "अरे भाई, ऐसा नहीं है. डाक्टर वहां हाथ भी नहीं लगाएगा. उस के नीचे होती है नसबंदी. वह जगह महफूज रहेगी. ठीक वैसे ही, जैसे सुरक्षा घेरे में प्रधानमंत्री."

पहला आदमी बोला, "भैया, इन डाक्टरों का कोई भरोसा नहीं. हम तो तुम पर भरोसा कर के आए हैं. आप ही हमारे ब्लैक कैट कमांडो हैं. देखना, डाक्टर तो ठीक है न. कहीं नकली डिगरी ले कर कोई अनाड़ी डाक्टर तो नहीं कर रहा है औपरेशन."

उस मुलाजिम ने शान से कहा, "डाक्टर 10 साल से यही काम कर रहा है."

दूसरे आदमी ने कहा, "उस डाक्टर ने अपनी नसबंदी कराई है क्या? या दूसरों के कनैक्शन ही काट रहा है?"

पहले आदमी ने कहा, "हमें इन बातों से क्या लेना? डाक्टर पैसे वाला है. 10 बच्चों को भी पाल लेगा. हम गरीब आदमी हैं. हमें 25 सौ रुपए की जरूरत है, डाक्टर को नहीं."

दूसरे आदमी ने पूछा, "अच्छा बाबूजी, कैसे होता है औपरेशन? कुछ जानकारी है आप को? आप

समस्या आपकी समाधान Dr. Advice से

प्रश्नः पिछले 5–6 वर्षों से मेरे जोड़ों में दर्द रहता है। दर्द की वजह से चलना – फिरना मुश्किल हो गया है। कोई आयुर्वेदिक उपचार बतायें। इम्तियाज अहमद, रायपुर

उत्तरः आप **REPL** निर्मित **ऑर्थोविट कैप्सूल** सुबह–शाम एक कैप्सूल लें और ऑर्थोविट ऑयल से प्रभावित जोड़ों की मालीश करें काफी लाभ होगा।

प्रश्नः डा. साहब मेरी उम्र 21 वर्ष है, कुछ बुरी आदतों के कारण अत्यधिक कमजोरी आ गई है, इच्छा मात्र से हीं असंतुलित हो जाता हूँ। ब्रजेश, लखनऊ

उत्तरः बुरी आदत के कारण अक्सर ये सब होता है। आप अपने काम पर ध्यान दें और **विगोरा 2000** की 7 शीशी का कोर्स करें, आपको फायदा होगा।

प्रश्नः मैं 35 वर्षीय विवाहित पुरूष हूँ। समय बढ़ाने हेतु समुचित उपाय बताएं साथ ही कमजोरी को दूर करने के लिए मैं काफी चिंतित रहता हूँ। कोई अच्छा और हानिरहित उपाए बतायें। आविद, फिरोजाबाद।

उत्तरः आप निराशा मन से निकाल दें और **REPL** का विगोरा 5000 का 6 शीशी का कोर्स करें एवं विगोरा ऑयल से मालिस करें। यह होमियोपैथिक लिक्युड दवा है जिसका कोई भी साइड इफेक्ट नही है।

प्रश्न : मेरे पति अक्सर नये–नये तेल, तिल्ला प्रयोग किया करते थें। तत्काल तो किसी में फायदा होता था और किसी में नहीं लेकिन अब कोई तेल, तिल्ला भी असर नही करता है। उचित दवा बताने की कृपा करें। ममता, हरियाणा

उत्तर : बाजार में उपलब्ध ढेर सारी तेल, तिल्ला जो लोगों को बड़े–बड़े सब्जवाग दिखाकर अपना उत्पाद बेचते हैं। परिणाम आपके सामने है। आप अपने पति को **REPL का विगोरा हाई पावर** दिन में तीन बार ¼ कप पानी में 20–20 बूंद दें और हाई पावर मुसली 1 कैप्सूल प्रत्येक दिन रात में सोते वक्त दूध के साथ में दें। यह दवा जाँचा, परखा और परिस्कृत है।

प्रश्न : मेरी उम्र 61 वर्ष है। बढ़ती उम्र के कारण उत्साह की कमी महसूस होती है। योग्य इलाज बतायें। ब्रजेश सिंह, दिल्ली

उत्तरः आप विगोरा **5X** का 6 शीशी का कोर्स कीजिए और सुबह–शाम कामसुत्रम् ऑयल से दो महीने तक लगातार मालिश करें इसका असर वर्षों रहेगा। आपके लायक होंगे।

प्रश्नः डा. साहब मेरी उम्र 55 वर्ष है। शरीर से बिल्कुल स्वस्थ्य हूँ, लेकिन इच्छाशक्ति के रहते हुये भी घंटों प्रयास करने के बाद भी हम सफल नहीं हो पाते है। कोई जोश पैदा करने वाला हानिरहित आयुर्वेदिक दवा बतायें। जगदीश प्रसाद, झरिया।

उत्तरः जगदीश जी, अब आपको घंटों प्रयास करने की जरूरत नहीं है आप समय से 1 घंटे पहले **REPL** निर्मित **तत्काल कैप्सूल** दूध के साथ लें। आपको भरपूर फायदा होगा। यह दवा पूर्णतः आयुर्वेदिक है एवं इसका कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है।

प्रश्नः मैं 19 वर्षीय पतली–दुबली युवती हूँ। मेरे शरीर अविकसित है। इस कारण मुझे हीन भावना रहती है एवं कहीं आती–जाती भी नहीं हूँ। कृपया उपाय बतायें। सरीता, दाऊदनगर।

उत्तरः शरीर का संपूर्ण विकास नही होने के अनेक कारण है, जैसे हार्मोन्स की कमी, अनुवांशिक। आप चिन्ता मन से निकाल दें एवं **REPL** का **Breastriim Oil** शरीर पर सुबह–शाम दिये गये निर्देश के अनुसार 3 माह तक मसाज करें। इसके नियमित इस्तेमाल से शरीर आकर्षक नजर आएंगी।

प्रश्नः मैं 2 बच्चें कि माँ हूँ, दोनों बच्चें नौरमल डिलेवरी से हुए है। मेरी जनांग काफी ढीली हो गई है। इधर कुछ दिनों से पानी अत्यधिक गिरते रहते है कोई हानिरहित उपचार बताएं। बबली सिंह, पंजाब

उत्तरः बबली जी, आप विगोरा 1000 दिन में 2 बार 15–15 बूँद आधा कप पानी में मिलाकर पियें और **Virgin Oil** को अंदरुनी हिस्से पर लगाएं। यह बिल्कुल ही हानिरहित दवा हैं।

प्रश्नः डा. साहब, मेरी उम्र 39 वर्ष है। मुझ में उत्साह की कमी और शारीरिक कमजोरी की परेशानी है। कोई आयुर्वेदिक कैप्सूल बताएं। सतीश साह, गोरखपुर

उत्तरः उत्साह की कमी और शारीरिक कमजोरी के लिए आप हाइपावर मुस्ली कैप्सूल प्रत्येक दिन रात में सोते समय दूध के साथ लें। आपको लाभ होगा।

चिकित्सीय परामर्श के लिए स्वपता लिखित डाक लिफाफा निम्न पते पर भेजें :–
REPL प्लाजा, तीसरा तल्ला
फेडरल, पटना–801505

किसी भी रोग संबंधी निदान के लिए Dr. Advice पुस्तिका (होमियोपैथिक) निकटतम् स्टॉकिस्ट से मुफ्त प्राप्त करें।

नसबंदी

ने तो जरूर ही कराई होगी?"

"हां, कराई है. महज 10 मिनट का काम है. चुपचाप बैठो. चायनाश्ता जो चाहिए, सब मिलेगा. औपरेशन होते ही पैसा भी मिलेगा."

पहले आदमी ने कहा, "उस में आप का भी कमीशन बंधा है क्या? नहीं, ऐसे ही पूछ रहे हैं. क्या है कि सरकारी मुलाजिम कोई काम लिएदिए बिना करते नहीं हैं."

उस मुलाजिम ने उस आदमी से कहा, "भैया, नस बंधवाने में कहां कमीशन बंधा है. अपनी जेब से लगा कर दे रहे हैं. भरोसा करो और चुप बैठो."

भीड़ में लोग 2-2 के ग्रुप बना कर आपस में बातें कर रहे थे. उस में से एक ने कहा, "कुछ तो गड़बड़ जरूर है."

दूसरे आदमी ने कहा, "भाई, क्या गड़बड़ है?"

पहले ने कहा, "भले ही हम रिकशा चला रहे हैं, पर ग्रेजुएट हैं. हम समझ रहे हैं सब. इतनी भीड़ में जगन, मगन, छगन सब हैं. गफ्फूर, अब्दुल, करीम में से कोई नहीं है."

दूसरे ने कहा, "तुम रिकशा चलाने वाले समझ रहे हो, देश चलाने वाले नहीं समझ रहे होंगे?"

पहले ने कहा, "देश चलाने वाले समझ रहे होते, तो हम ग्रेजुएट हो कर रिकशा नहीं चला रहे होते."

दूसरे ने कहा, "ग्रेजुएट हो, तो नौकरी क्यों नहीं की? रिकशा क्यों चला रहे हो?"

पहले ने कहा, "अरे, नौकरी में लग जाते, लेकिन पीछे एक थर्ड डिवीजन पास कैंडीडेट था. सरकारी मुलाजिम कहने लगा कि भारत के संविधान में लिखा है कि तुम फर्स्ट डिवीजन हो. तुम्हें नौकरी पर नहीं ले सकते. थर्ड डिवीजन वाला रिजर्वेशन में आता है, उसे लेना पड़ेगा.

"और कहने लगा कि पंडितजी, आप तो कथा बांचो. नौकरी के काबिल नहीं हो आप. हम ग्रेजुएट थे. पोथीपुराण नहीं पढ़े थे. सो, रिकशा चला रहे हैं भाई."

अचानक तीसरा आदमी बोला, "तुम्हारे पुरखों के पाप, हमारे पुरखों के श्राप. तुम करो काज, हम करेंगे राज. जय भीम."

पहले ने पूछा, "ये महाभारत का भीम बीच में कहां से ले आया?"

तीसरा बोला, "महाभारत का नहीं, भारत का भीम. संविधान बनाने वाले अंबेडकरजी."

पहला बोला, "अरे, अंबेडकर ने 20 साल के लिए रिजर्वेशन दिया था. वे होते तो खत्म हो गया होता. ये राजनीतिक पार्टियों ने रिजर्वेशन को वोट बैंक बना डाला है. सब हिंदुओं की नसबंदी कर रहे हैं. क्यों? मुसलिमों की क्यों नहीं कर रहे?

"हमारे घटाने से क्या होगा, वे तो बढ़ाते जा रहे हैं. ऐसे में सरकार का नसबंदी कार्यक्रम कहां कामयाब होगा. सब चाल है भाई."

अब दूसरा कुछ गुस्से में बोला, "क्या बक रहे हो? मैं मुसलिम हूं. अकरम कबाड़ी... नाम सुना है. हम करवा रहे हैं न."

पहला बोला, "तुम 50 साल के फ्यूंज बल्ब. अब तुम्हारी नस बंद हो या खुली रहे, क्या फर्क पड़ता है. अब तुम से थोड़े ही कुछ होना है. कबाड़ हो गए हो. तुम तो 25 सौ रुपए के चक्कर में आए हो."

"सच तो यह है कि तुम लोग बहुसंख्यक बना कर हम लोगों को अल्पसंख्यक बनाने की चाल है. हिंदुस्तान को पाकिस्तान बनाने पर तुली है सरकार. नहीं करानी हमें नसबंदी," कह कर पहला गुस्से में उठ खड़ा हुआ.
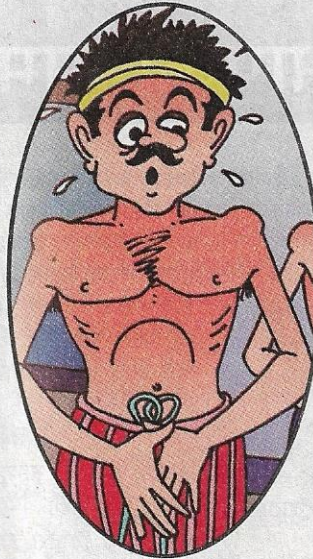
पटवारी, जो उसे पकड़ कर लाया था, ने अपने साथी से कहा, "तहसीलदार साहब ने बांटने के लिए जो शराब की बोतलें दी थीं, ले कर आ. पिलाने का वक्त आ गया है."

फिर वह दौड़ कर रिकशे वाले के पास गया और बोला, "हमारे पेट पर लात मत मारो भाई. आप के लिए शराब का भी पूरा इंतजाम है."

झट से शराब की बोतल पेश की गई. अपने गम भुलाने के लिए पहले ने पूरी बोतल गटक ली और बैठ गया.

तभी तीसरे ने कहा, "हमारे साथ भेदभाव. जात का पंडित है, तो उस के लिए खास शराब और हमारे लिए...

"हमारे लिए भी इंतजाम किया जाए, नहीं तो हम चले."

पटवारी ने उसे भी शराब पिलाई. ज्योंज्यों शराब की मांग उठती रही, उस की सप्लाई होती रही.

पटवारी ने खाद्य महकमे के एक मुलाजिम से उदास लहजे में कहा, "सोचा था, आज टारगेट पूरा हो जाएगा, तो जम कर पार्टी मनाएंगे. सब बांटनी पड़ी. अब हमें खरीद कर पीनी पड़ेगी."

खाद्य विभाग के मुलाजिम ने उसे समझाते हुए कहा, "तहसीलदार साहब ने तो बांटने के लिए ही दी थी. नियम से बंट गई. हम अपने पैसों से पी लेंगे. टारगेट तो हो जाने दो. वैसे भी तुम पहले तो पी ही चुके हो. अच्छा होगा कि तुम नियम से चलो."

पटवारी ने गुस्से में कहा, "तुम मराठी लोग नियम से बहुत चलते हो. अपने नियम हमें मत बताओ."

खाद्य महकमे के मुलाजिम को भी गुस्सा आ गया और बोला, "देखो, यह मराठी, महाराष्ट्र का राग यहां मत अलापो. तुम बिहारी हो, तो हम भी जय शिवाजी, जय गणेश..."

पटवारी भी बोला, "एक बिहारी सौ पर भारी. जय चाणक्य, चंद्रगुप्त, पटना, दरभंगा, लालू, राबड़ी..."

"आमची मुंबई, मी मर्द मराठा. मराठा मरता है या मारता है."

"हां, मुंबई में तो मार ही रहे हो. लेकिन मुंबई महाराष्ट्र में और महाराष्ट्र राष्ट्र में."

इस से पहले कि बात आगे बढ़ती, एक कंपाउंडर ने आवाज दी, "गणेशी... झनकू..."

दोनों में से एक पटवारी और एक खाद्य महकमे के मुलाजिम का बकरा था. दोनों ने बिहार, महाराष्ट्र की लड़ाई छोड़ कर पेट और टारगेट की लड़ाई जीतने के लिए अपनेअपने लाए आदमियों से कहा, "चलिए, आप का नंबर है. हज्जाम उस्तरा ले कर इंतजार कर रहा है."

हज्जाम का नाम सुन कर दोनों घबरा गए. एक बोला, "नसबंदी में हज्जाम का क्या काम?"

दूसरा भी घबरा कर बोला, "आप तो कह रहे थे कि एक धागे से नसबंदी होती है. उस्तरे से कहीं काट तो नहीं रहे हो?"

पटवारी और खाद्य महकमे के मुलाजिम ने समझाया, "अरे भाई, सफाई के लिए है."

पहला घबरा कर बोला, "सफाई? कैसी सफाई? मर्दानगी ही साफ कर दोगे, तो बीवी को क्या मुंह दिखाऊंगा. क्या सोचेगी मेरी औरत? पैसे और शराब के चक्कर में मर्दानगी कटवा कर आ गए."

दूसरा भी डरते हुए बोला, "तभी तो मैं ने सोचा कि इतना खिलापिला रहे हैं. वे भी सरकारी आदमी. उस पर पटवारी और राशन की दुकान वाला. कभी राशन तो दिया नहीं, अब शराब, चाय, नाश्ता, 25 सौ रुपए और भी लालच. यह बना देंगे, वह बना देंगे. यह नहीं बताया कि कटवा देंगे.

"बकरे को हलाल करने से पहले जैसे खिलातेपिलाते हैं, ऐसे ही हमारी मर्दानगी हलाल करने से पहले... नहीं, हम नहीं जाएंगे."

पटवारी को गुस्सा आ गया. उस ने खाद्य महकमे के मुलाजिम से कहा,

"अरे समझा न यार इसे. तुम्हीं समझा सकते हो. नहीं समझे तो मैं कान के नीचे बजा कर समझाता हूं."

"ऐ बिहारी, ज्यादा अकड़ मत. प्यार से, नहीं तो कलक्टर साहब की कलम चली, तो गई नौकरी. फिर करते रहना जय बिहार, जय महाराष्ट्र."

पहले ने दूसरे से कहा, "उस्ताद, बंदर को प्यारी पूंछ और मर्द को प्यारी मूंछ. भागो, इसी में भलाई है."

दूसरे ने पहले से कहा, "हां यार, अब तो भागना ही पड़ेगा."

वे भागने को हुए, तो बिहारी ने उन दोनों को कस कर दबोच लिया और मराठी ने उसे समझाया. "हज्जाम के उस्तरे से बालों की सफाई होगी."

पहला बोला, "दाढ़ी कटवाने के लिए बुलाया था, तो पहले कहना था. नसबंदी की बोल कर क्यों लाए?"

दूसरा बोला, "दाढ़ीबाल कटवाने के इतने पैसे मिलते हैं कहीं. हम गरीब, अनपढ़ जरूर हैं, लेकिन इतने भी बेवकूफ नहीं."

पटवारी ने दोनों के गाल पर 2 थप्पड़ जड़े. फिर खाद्य महकमे के मुलाजिम ने समझाया, "वहां भी बाल होते हैं. वहां के बाल काटेंगे हज्जामजी, फिर साफसुथरी जगह पर ही ऑपरेशन करेंगे डाक्टरजी. उस के बाद मिलेंगे इनाम के रुपए. सरकारी मदद."

वे दोनों बात समझ गए और अंदर चले गए.

अंदर जाते ही पहले हज्जाम ने सफाई शुरू की.

पहले ने कहा, "यार, पहली बार नंगा हो रहा हूं किसी अजनबी के सामने. आराम से देख कर, कुछ और मत काट देना."

हज्जाम गुस्से में बोला, "हमें सिखा रहा है. हम पर भरोसा नहीं है, तो खुद ही कर ले. यह ले उस्तरा. एक तो सरकारी रेट पर सफाई करो, उस पर ऐसी जगह पर. हम ने भी किसी की इस जगह पर उस्तरा नहीं चलाया आज तक. उस्तरा भी सपने में आ कर डांटता है कि शर्म नहीं आती कहांकहां चलवा रहे हो.

"वह तो हम हैं कि उस्तरे को समझाते हैं कि भाई बाल कहीं के हों, हज्जाम का काम है काटना."

दूसरे ने कहा, "ठीक है. नाराज मत हो. काट दो."

हज्जाम ने कहा, "अभी तो डाक्टर और नर्स के सामने नंगा जाना पड़ेगा."

पहले ने कहा, "मतलब छोटी डाक्टरनी बाई के सामने हमें शर्म आएगी."

हज्जाम ने कहा, "अबे, जब नर्स को औरत होते शर्म नहीं आएगी, तो तुम्हें क्यों आएगी? तुम तो मरद हो."

दूसरा बोला, "आराम से उस्तरा चलाओ. नाराज मत हो भैया. गुस्से में कुछ और कट गया, तो नर्स बाई के सामने पहुंचने तक मरद ही न रह पाएंगे."

हज्जाम ने अपना काम किया. उस के बाद 2 औरतों ने, जो नर्सें थीं, उन से कहा, "कपड़े उतार कर लेट जाओ."

पहला बोला, "यार, क्या प्रोग्राम है? समझ नहीं आ रहा?"

दूसरा बोला, "नसबंदी है या प्यार की बंदी."

एक नर्स ने इंजैक्शन लगाया, दूसरी नर्स ने उन की मर्दानगी को पकड़ा.

एक ने पूछा, "आप ऐसा काम करती हैं. आप को शर्म नहीं आती."

नर्स ने मशीनी अंदाज में कहा, "हमारा पेशा है सेवा करना."

दूसरे ने कहा, "बहुत अच्छी सेवा है. मजा आ रहा है."

तभी डाक्टर ने खाल खींच कर नस पकड़ी और कांटे में फंसा धागा अंदर कर दिया. दोनों की हलकी कराह निकली.

नर्स ने मुसकराते हुए कहा, "क्यों मजा आ रहा है न? हो गई नसबंदी. अब कोई औरत तुम पर आरोप नहीं लगा सकती कि तुम उस के बच्चे के बाप हो."

दूसरी नर्स ने हिदायतों के साथ कुछ दवाएं दीं. दोनों हंसतेशरमाते और दर्द से कराहते बाहर आ गए. पटवारी और खाद्य महकमे के मुलाजिम ने उन्हें वादे के मुताबिक 25 सौ रुपए, प्रैशर कुकर, गरीबी रेखा का कार्ड, ग्रीन कार्ड, शराब की बोतल थमाते हुए कहा, "जाओ, ऐश करो."

वे खुशीखुशी कुछ हलके दर्द से दुखी होते हुए बाहर निकल आए.

टारगेट पूरा होने पर बिहारी व मराठी गले मिले, क्योंकि उन की नौकरी बच गई. सरकार की तरफ से उन्हें इनाम भी मिला और दोनों ने शानदार पार्टी मनाई. इस तरह नसबंदी का कार्यक्रम चलता रहा.

कुछ मुलाजिम, जिन का टारगेट पूरा नहीं हुआ, वे अभी भी गलीगली घूम रहे हैं और कह रहे हैं कि नसबंदी करवा लो. भाभियो और बहनो, घर के सांड़ों को खुला छोड़ कर किसी और का बाप मत बनाओ. अपने पतियों को सौतन से बचाना है, नसबंदी करवाना है. नसबंदी कराइए, तमाम फायदे पाइए. ●

फिल्मी सितारों का बड़बोलापन

आरती सक्सेना

शब्दों का मायाजाल दिल को ही नहीं, बल्कि दिमाग को भी काबू में करने की ताकत रखता है. यही वजह है कि कई बार किसी की बात दिल में खुशी के दीप जला देती है, तो किसी की कड़वी बात दिल को बिना औजारों के छलनी कर देती है.

शब्दों की बातें करें, तो बात करने की कला हर किसी में नहीं होती. इस कला में माहिर होने के लिए जरूरी है कि सामने वाला न सिर्फ आप की बातों से प्रभावित हो, बल्कि उस को यह भी एहसास हो कि आप सोलह आने सच बोल रहे हैं. लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ, तो लोग आप की बातों को हलकेपन से लेना शुरू कर देंगे और आप को बड़बोला कहने लगेंगे.

ज्यादातर प्रेमी अपनी प्रेमिका से चांदतारे तोड़ लाने की बात करते हैं या अपना प्यार जताने के लिए दिल चीरने की भी बात करते हैं, तो वे सिर्फ ऐसा बोलते हैं, पर इस में कोई सचाई नहीं होती. अगर फिल्मी कलाकारों की बात करें, तो फिल्म इंडस्ट्री में भी ऐसे कुछ सितारे हैं, जिन की बातों पर हंसने का मन करने लगता है. पेश हैं, कुछ फिल्मी सितारों की दिलचस्प बातें:

सलमान का कुंआरापन

सलमान खान ने एक बात कही थी कि वे कुंआरे हैं और जो भी करेंगे शादी के बाद सुहागरात पर ही करेंगे.

अब आप ही बताइए कि सलमान खान के इस बयान पर भला हंसे बगैर कैसे रहा जा सकता है. जब से सलमान खान के फिल्मी कैरियर की शुरुआत हुई है, तब से ले कर आज तक उन की कई सारी प्रेमिकाएं रह चुकी हैं, जैसे संगीता बिजलानी, सोमी अली, ऐश्वर्या राय, कैटरीना कैफ, जैकलिन फर्नांडीस वगैरह.

ऐसे में अगर सलमान खान कहेंगे कि वे कुंआरे हैं, तो लोग तो उन पर हंसेंगे ही.

किसी ने चुटकी ली कि सलमान के इस बयान के बाद उन की पुरानी प्रेमिकाओं के घरों के सदस्यों ने चैन की सांस ली और पार्टी भी की.

कैटरीना कैफ की शादी

अपनी फ्लौप ऐक्टिंग की शुरुआत के बाद सलमान खान के कंधों का सहारा ले कर फिल्मों में कामयाबी पाने वाली कैटरीना कैफ कई सालों तक सलमान की प्रेमिका के रूप में मशहूर हुईं. उस के बाद अक्षय कुमार के साथ उन के प्रेम संबंधों की चर्चा हुई, जिस की वजह से सुना गया कि सलमान ने कैटरीना पर हाथ तक उठा दिया था. आजकल कैटरीना रणबीर कपूर के साथ न सिर्फ डेटिंग कर रही हैं, बल्कि दोनों के घर वालों के बीच शादी की बातचीत भी चल रही है. और तो और रणबीर और कैटरीना कैफ ने मुंबई के बांद्रा इलाके में घर भी खरीद लिया है. तो अब यह सवाल उठता है कि कैटरीना का मीडिया के सामने इस तरह का बयान देने का क्या मतलब है कि वे पूरी तरह सिंगल हैं और उन का मिंगल (शादी करने) होने का कोई इरादा नहीं है.

रानी मुखर्जी के इरादे

रानी मुखर्जी ने अपनी शादी से पहले कई बार इस तरह की बातें की थीं कि उन का आदित्य चोपड़ा के साथ प्यार का कोई चक्कर नहीं है और न ही उन का शादी करने का इरादा है. लेकिन अब जबकि सचाई सामने है और रानी मुखर्जी आदित्य की रानी बन चुकी हैं, तो उन्होंने अपनी झूठी बयानबाजी पर परदा डालने के लिए मीडिया को शादी के लड्डू तक खिला डाले.

इमरान हाशमी के चुम्मे

फिल्म 'मर्डर' से ले कर 'डर्टी पिक्चर' और 'वन्स अपौन ए टाइम इन मुंबई' तक में इमरान हाशमी ने हर फिल्म में अपनी हर हीरोइन को चुंबन दिया है. इतना ही नहीं, इमरान ने कई फिल्मों में बिस्तर के सीन भी दिए हैं. ऐसे में उन का यह बयान कि उन को चुंबन दृश्यों से बोरियत हो गई है, बेमानी लगता है.

ऐसे ही कई सारे बिना सिरपैर के बयान दे कर कंगना राणावत, राखी सावंत, सोनम कपूर, मल्लिका शेरावत जैसे कई फिल्म कलाकार चर्चा में बने रहते हैं. उन के इसी बड़बोलेपन की वजह से आज फिल्मी सितारों को अपनी फिल्में दर्शकों तक पहुंचाने के लिए फिल्म प्रमोशन के दौरान तरहतरह के हथकंडों का इस्तेमाल करना पड़ता है.

फिल्मी सितारे अगर बड़बोलेपन के बजाय अपने काम पर ज्यादा ध्यान दे कर ढंग की फिल्में करें, तो उन को पब्लिसिटी के लिए इस तरह की बयानबाजी की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. ●
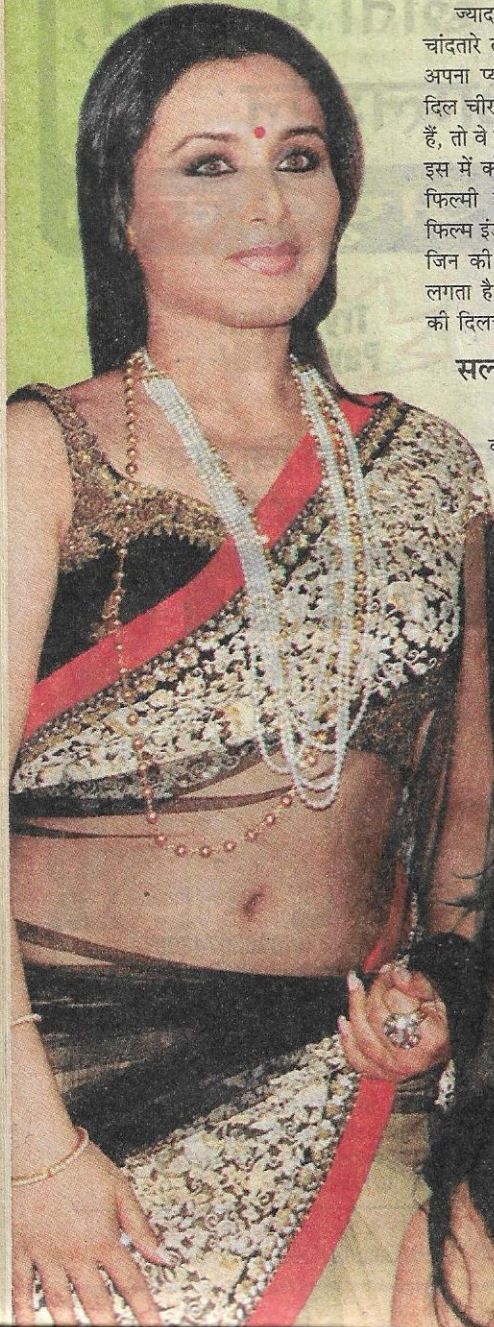
कहानी

ठंड

अरुण अलबेला
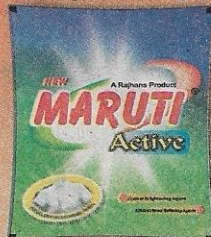
ठंड का मौसम था. गोधूलि की बेला थी. बस उग्रवादी क्षेत्र से गुजर रही थी.

उग्रवादी क्षेत्र के नाम से ही मुसाफिरों के अंदर से ठंड भाग गई थी. सब अंदर से डरे हुए और बेचैन थे. वे सभी यही सोच रहे थे कि कोई हादसा न हो. बस सकुशल इलाका पार हो जाए कि तभी 'धायं' की आवाज सुनाई पड़ी.

बस के आगे का शीशा तोड़ कर गोली ड्राइवर के हाथ में जा लगी थी. ड्राइवर बस रोक कर एक ओर लुढ़क गया, तभी खूंख्वार सा दिखाई देने वाला एक उग्रवादी बंदूक ताने दरवाजे के पास आया.

उस के साथ खड़ा दूसरा उग्रवादी कड़क आवाज में बोला, "जान की सलामती चाहते हो, तो जल्दी से दरवाजा खोलो. हमारे पास समय कम है."

डर से सब की घिग्घी बंध गई. पहले तो अफरातफरी सी मची, फिर सब सीट में धंस गए. कंडक्टर ने कोई रास्ता न देख कर दरवाजा खोल दिया और दोनों उग्रवादी अंदर आ गए.

बंधूकधारी उग्रवादी का कठोर स्वर उभरा, "कोई चालाकी नहीं करेगा. हमारी बात ध्यान से सुनो और अमल करो, नहीं तो सभी मुफ्त में मारे जाओगे. हमारे कुछ साथी बगल के खेतों में छिपे हुए हैं, हमें सिर्फ 2 मत समझना."

उग्रवादियों की बातों को सुन कर मुसाफिरों के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. कब क्या होगा, किस की जान जाएगी, किस के पैसेथैले छीने जाएंगे, पता नहीं.

थोड़ी देर पहले जो ठंड महसूस हो रही थी, खत्म हो गई. डर ने मुसाफिरों में गरमी फूंकना शुरू कर दिया.

तभी एक बंदूकधारी गरजा, "बिहार का यह इलाका हमारा है. यहां हमारी चलती है. सरकार हम पर इनाम रखे हुए है, पर हम प्यार से पेश आते हैं. जो हमारे प्यार को नहीं समझता, उसे हम नफरत से समझाते हैं. नफरत यानी कत्ल."

दूसरा उग्रवादी क्रूर हंसी हंसा और चिल्लाया, "हमारे कारनामे अखबारों में हर रोज छपते रहते हैं. आज का यह हादसा कल के अखबारों में छपेगा. जो बचेगा, वह पढ़ लेगा. अब अगड़ी जाति के लोग खड़े हो जाएं. हम उन से नरमी बरतेंगे."

यह सुन कर पिछड़ी जाति वाले डरे, जान पर खतरा है. उग्रवादी अगड़ी जाति के लगते हैं.

अगड़ी जाति वाले राहत महसूस करने लगे और उठ खड़े हुए.

"कोई पिछड़ी जाति का खड़ा तो नहीं हुआ? भेद खुलते ही मारा जाएगा," बंदूकधारी उखड़ा और एक शख्स माफी मांगते हुए बैठ गया.

"तू मुरगा बन के बैठ," दूसरा उग्रवादी उस शख्स को एक हाथ मारते हुए मुसाफिरों की पहचान करने लगा. उस की हरकतों से दहशत फैलती जा रही थी.

बंदूकधारी बोला, "ठीक है, सभी खड़े मुसाफिरों ने अपनी पहचान कर दी है. सब रुपए निकाल कर मेरे साथी के हाथ में देते जाएं. जो नहीं देगा, वह मारा जाएगा."

बैठे मुसाफिरों को विश्वास हुआ कि उग्रवादी अगड़ों के समर्थक नहीं.

पिछड़ी जाति वाले राहत महसूस करने लगे. अगड़ों ने डर से रुपए उन के हवाले कर दिए.

बंदूकधारी बोला, "पिछड़े खुश हैं. उन की खुशी को भी ठंड लग जाएगी. वे भी रुपए निकाल कर मेरे साथी के हवाले करें."

अगड़े खुश हुए कि चलो सिर्फ वही नहीं लुटे, पिछड़े भी लुट गए.

दूसरा उग्रवादी हंसा, "हम इसी तरह अगड़ेपिछड़ों को बांट कर लूटते हैं. हम ने सरकार से, राजनीतिक पार्टियों से, नेताओं से यह सब सीखा है. हम किसी के समर्थक नहीं."

मुसाफिरों ने समझ लिया, ये लुटेरे हैं. राहजनी करते हैं.

तभी बंदूकधारी बोला, "अब औरतों की बारी है. अगर वे अपनी इज्जत व जान की सलामती चाहती हैं, तो गहने उतार कर मेरे साथी की चादर में डालती जाएं. किसी के साथ कोई नरमी नहीं होगी," औरतें डर से गहने उतारने लगीं.

अगली सीट पर चुपचाप बैठी एक लड़की को देख कर बंदूकधारी चीखा, "तू क्यों चुप है?"

"देखते नहीं, मेरे पास कोई गहना नहीं है. न गले में, न कान में और न उंगली में."

दूसरा साथी गरजा, "तेरी ऐसी की

कविता

जख्म

टूट गया यह दिल मेरा, लुट गया आशियाना.
उसी ने रुलाया, जिस का था मैं दीवाना.

अपनी पनाह में बुला कर, उस ने हमें सताया.
और बाद में बेरहम ने, एक बहाना बनाया.

किस पर करूं भरोसा, किसे कहूं मैं अपना?
तोड़ा है उसी बेवफा ने, मेरी मुहब्बत का सपना.

जब यही थी तेरी हकीकत, तो क्यों किया था प्यार?
पलभर की खुशी दे कर, क्यों किया था बेकरार?

यह सारी दुनिया झूठी है, झूठा है यह जमाना.
ऐ यारो, कभी यहां यह दिल न लगाना.

- रवि प्रकाश मिश्रा

इस ठंड में तेरे इस गहने की हमें बहुत जरूरत है. हम तो वही ले कर खुश हो जाएंगे. चल नीचे."

"चुप रहो, क्या तुम्हारी बहनबेटी नहीं है?" वह लड़की बिना किसी डर से बोली.

"चुप तू रह. तुझे देख कर बीवी की कमी महसूस हो रही है. 2-4 घंटे के लिए तू ही हमारी बीवी बन जा. हम से अब कोई नहीं बचाएगा तुझे. देखना चाहती है हमारी ताकत को."

बंदूकधारी ने उस लड़की को खड़ा कर दिया. सभी मुसाफिर जान जाने के डर से चुपचाप बैठे रहे.

"चल, नहीं तो तुझे उतार कर सब को गोली मार दूंगा."

"सब को क्यों, मुझे ही मार. एक गरीब औरत की कमी हो जाएगी दुनिया से."

दूसरा उग्रवादी गरजा, "मरने दे इन सब को. ये मर्द नहीं, औरत हैं. जान जाने के डर से तेरी इज्जत भी लुटने देना चाहते हैं."

तैसी. बता कौन सा गहना देगी हमें?"

बंदूकधारी फिर गंभीर आवाज में बोला, "इज्जत भी तो एक गहना ही है.

मर्दों ने डर से सूख आए होंठों पर जीभ फेरी. उन्हें लड़की भली लगी, जो अपनी इज्जत दे कर उन की जान बचाना चाह रही थी.

"तू किस जाति की है?" बंदूकधारी ने पूछा.

लड़की नागिन की तरह फुफकार कर बोली, "तुझे जातपांत से क्या लेनादेना. इज्जत की कोई जाति नहीं होती. अगड़ों की इज्जत लूटो या पिछड़ों की."

"तो मैं सभी औरतों की इज्जत लूटूंगा. कल के अखबार में छपेगा कि उग्रवादियों ने अगड़ी और पिछड़ी औरतों की इज्जत लूटी, फिर जान ली. अगड़ी व पिछड़ी जाति के समर्थक व उग्रवादी संगठन हम जैसे तीसरे मोरचे के संगठन के कारनामों से थरथरा जाएंगे."

तभी मुरगा बना शख्स खड़ा हो कर गिड़गिड़ाया, "उग्रवादीजी, मैं इस देश के बेरोजगारों की फौज का एक बेकार सिपाही हूं. मुझे अपने धंधे में शामिल कर लो. अपनी तादाद बढ़ाओ. बेकार में मेरी जान ले कर क्या करोगे?"

"जान बचाने के लिए क्या दोगे?"

"एक बोतल शराब है झोले में. राहजनी कर के लाया हूं. पी कर अपने अंदर की ठंड दूर करो."

"ओह..." बंदूकधारी जोरदार हंसी हंसा, फिर लड़की की ओर देख कर बोला, "शराब पी कर मैं अपनी गरमी शांति से दूर करूंगा."

बंदूकधारी की घटिया बातों को सुन कर वह लड़की कसमसा उठी.

बंदूकधारी बोतल मुंह से उड़ेलने लगा. मौका मिलते ही उस लड़की ने आतंकवादी को जोरदार धक्का दे दिया. बंदूकधारी लड़खड़ाया, तभी उस शख्स ने आगे से एक लात उसे मारी, मानो फुटबाल में किक मारी हो.

उग्रवादी के हाथों से छिटक कर बंदूक एक ओर जा गिरी. पीछे से बस के कंडक्टर ने घसीटा और उसे दबोच लिया.

मुसाफिरों में ताकत आ गई. कुछ ने दूसरे उग्रवादी को दबोच लिया. मार खाखा कर दोनों उग्रवादी बेहोश होने लगे.

मुसाफिरों में जातिगत भावना खत्म हो चुकी थी. कंडक्टर ने ही बस स्टार्ट की और भगाते हुए थाने की ओर चल पड़ा.

बाहर की ठंड अंदर की गरमी को दबोचने लगी. ठंड का एहसास होते ही सब राहत महसूस करने लगे. ●

भारत सरकार

"हमें आपसी मतभेद एवं ऊंच-नीच के अंतर को भूलकर समानता का भाव विकसित करना है। हमें एक ही पिता की संतानों की तरह जीवन व्यतीत करना है।"

सरदार वल्लभभाई पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल

की जयंती पर उनका स्मरण करते हुए

31 अक्तूबर को

राष्ट्र मनाएगा

राष्ट्रीय एकता दिवस

अपने शहर/जिले में हो रही एकता दौड़ एवं राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ में शामिल हों।
शाम को पुलिस परेड देखें।
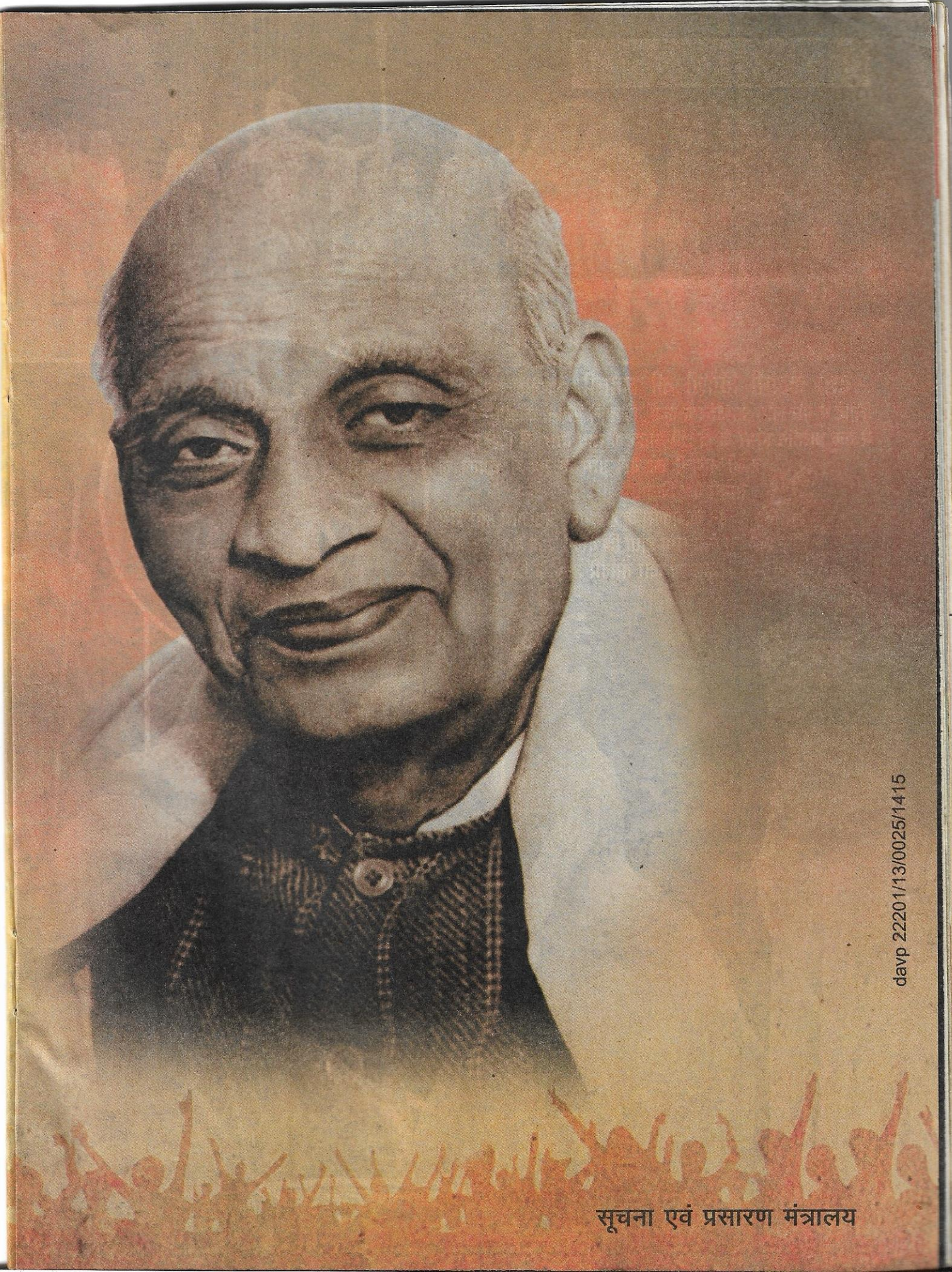
davp 22201/13/0025/1415

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

देशी कहानी विदेशी की जबानी. भारतीय वेशभूषा में लिपटे ये गोरे लोग आस्ट्रेलिया के हैं, जिन्होंने सिडनी के ओपेरा हाउस में एक भारतीय डांसर के विदेशी योद्धा के साथ प्यार की दिल छू लेने वाली कहानी को बैले डांस के रूप में दर्शकों के सामने पेश किया.

इन कलाकारों के हावभाव, अदाकारी और डांस ने ऐसा समां बांधा कि देखने वाले हैरान रह गए. कुछ शानदार तसवीरें आप के लिए.

लंबी कहानी

बाप बड़ा न भैया सब से बड़ा रुपैया

विजय सिंह मीणा
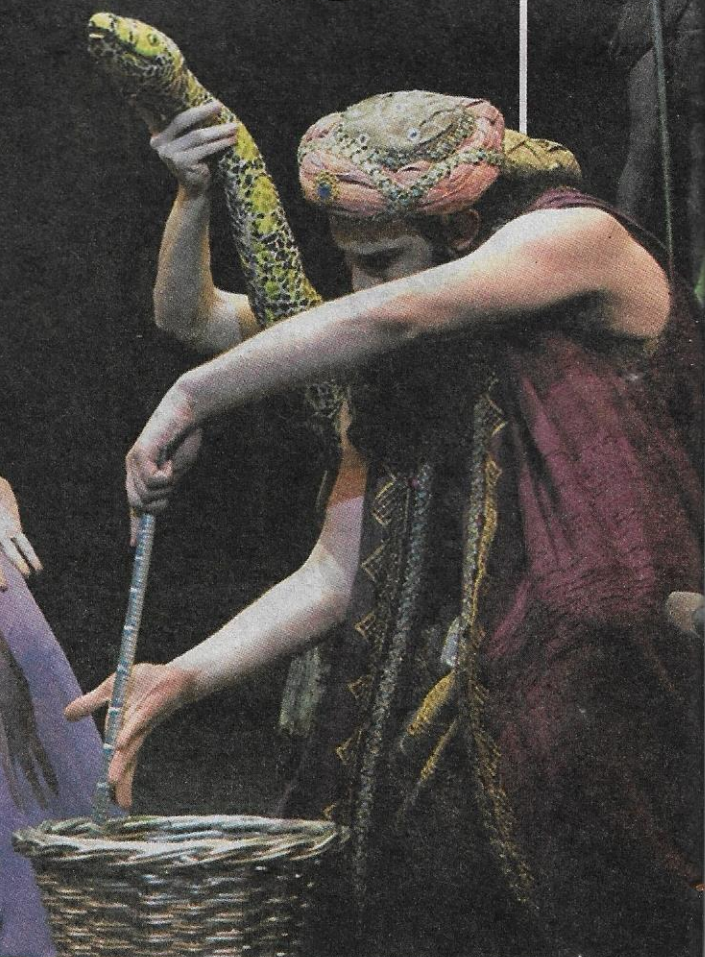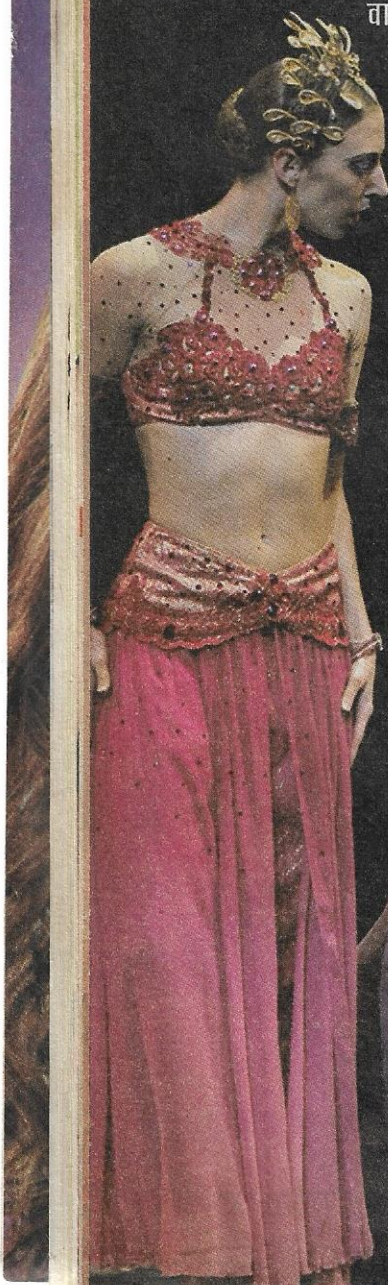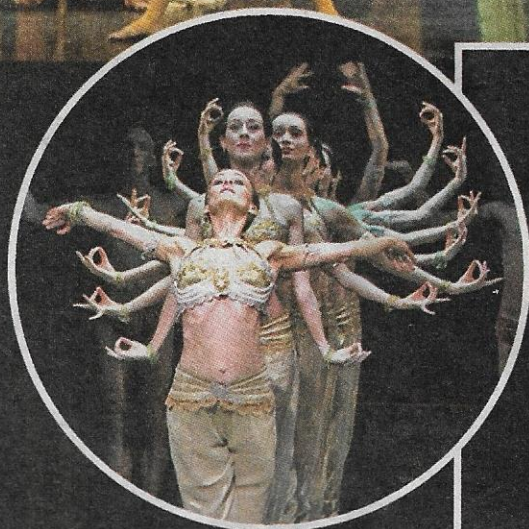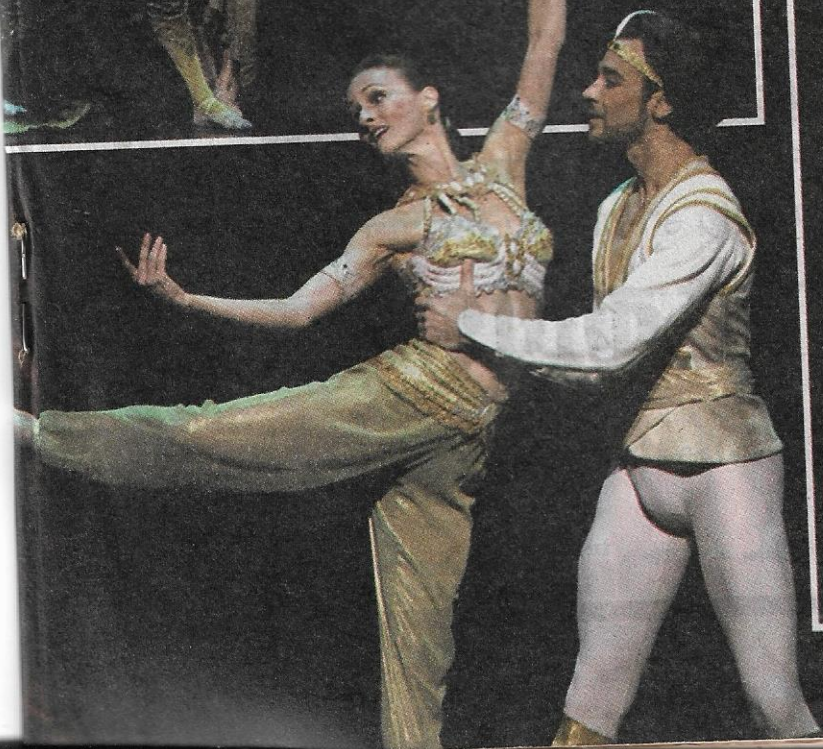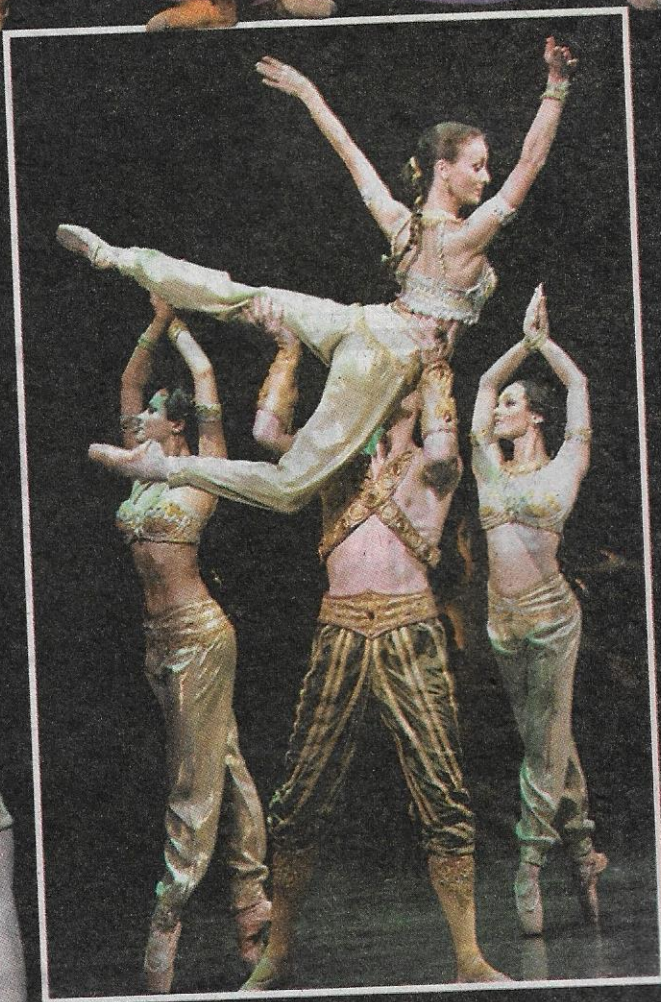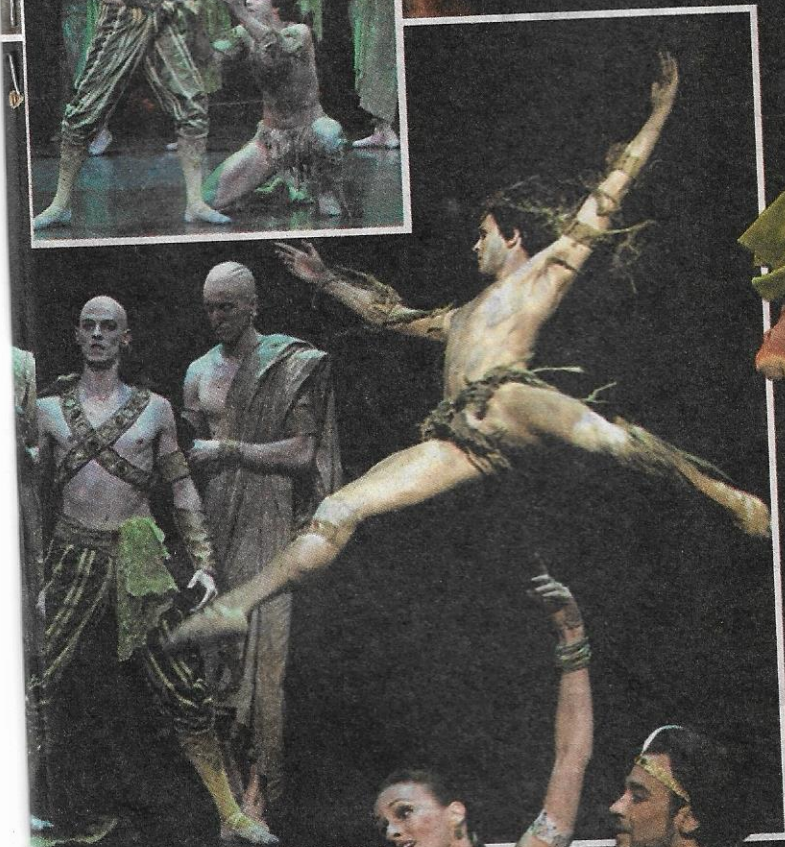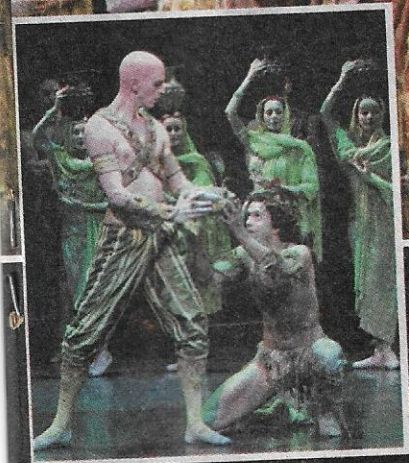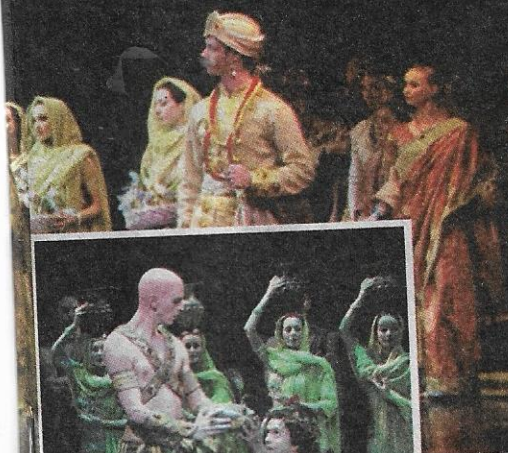
मजबूत कदकाठी, इकहरा बदन और रातदिन जी तोड़ मेहनत व आंखों में ईमानदारी... यही संतू की पहचान थी. वह गांव का मेहनतकश किसान था. बेईमानी, दगाबाजी जैसे शब्द मानो उस ने सुने ही न हों.

रातदिन पत्नी के साथ खेतों में मेहनत करना ही संतू की दिनचर्या थी. उस के 3 बेटे थे. बड़ा रामभजन, मझला गणेश और सब से छोटा धन्ना.

दोनों बड़े बेटे पिता की तरह सीधेसादे और भोले थे, पर छोटा बेटा धन्ना निहायत ही चालबाज था.

माली हालत ठीक न होने के चलते संतू अपने दोनों बड़े बेटों को प्राइमरी स्कूल से आगे नहीं पढ़ा सका, लेकिन धन्ना को वह पढ़ालिखा कर बड़ा आदमी बनाना चाहता था.

धन्ना 10वीं जमात में पढ़ रहा था. उस की पढ़ाई जारी रखने के लिए संतू ने अपने दोनों बड़े बेटों को खेती के काम में लगा दिया था.

गांव के पास ही बहने वाली नहर से किसान सिंचाई करते थे. सूरज ढलने में अभी समय था. नहर के दोनों ओर पेड़ों के झुरमुट थे.

वहां धन्ना और रामू बैठे थे. रामू भी धन्ना के ही गांव का था और धन्ना का सहपाठी था. दोनों स्कूल से भाग कर यहां आ गए थे.

धन्ना ने कहा, "रामू, मौसम इतना अच्छा हो रहा है... क्यों न एक बाजी ताश की हो जाए?"

"नहीं, तुम हमेशा बेईमानी करते हो," रामू ने न में अपनी गरदन हिलाते हुए कहा.

"नहीं रामू, तू तो मेरा सब से जिगरी दोस्त है, मैं तुझ से थोड़े ही बेईमानी करूंगा," धन्ना ने नाटकीय लहजे में कहा. साथ ही, शर्त रखी कि जो हारेगा, वह सामने वाले खलिहान से अनाज चुरा कर लाएगा.

भोलाभाला रामू चालबाज धन्ना की चिकनीचुपड़ी बातों में आ गया. दोनों ने

ताश खेलना शुरू किया. थोड़ी ही देर में धन्ना ने चालबाजी से उसे हरा दिया.

"जा रामू, शर्त के मुताबिक अब तू जा कर खलिहान से अनाज ले आ," धन्ना ने आदेश दिया.

रामू बेचारा दबे पैर खलिहान की ओर चल दिया.

खलिहान का मालिक थोड़ी देर के लिए आवारा पशुओं को खेत से भगाने के लिए इधरउधर चला गया था. उसी समय रामू ने एक बड़े थैले से अनाज भरा और जल्दी से धन्ना के पास वापस आ गया.

उन्होंने नहर के पास झाड़ियों में अनाज का थैला छिपा दिया. धन्ना ने कहा "अंधेरा होने पर हम इसे ले जाएंगे. अब तुम जाओ."

लेकिन थोड़ी ही देर बाद धन्ना फिर वहां आ गया और उस ने वह अनाज गांव के बनिए की दुकान पर बेच दिया.

इस के बाद धन्ना रामू के घर गया और उस से कहने लगा, "तुम वहां से अनाज कब उठा लाए? जब मैं वहां गया, तो मुझे अनाज वहां नहीं मिला."

रामू बेचारा मना करता रहा कि उसे कुछ पता नहीं, पर धन्ना मक्कारी पर उतर आया था.

"देख रामू, या तो तू चुपचाप उतना अनाज मुझे ला कर दे दे, वरना मैं उस खलिहान वाले से जा कर बोल दूंगा," धन्ना ने धौंस जमाते हुए कहा.

मरता क्या न करता, बेचारे रामू ने दोबारा अपने ही घर में चोरी की और धन्ना को अनाज ला कर दे दिया.

धन्ना का पढ़ाईलिखाई में तो दिमाग कम चलता था, लेकिन जहां भी बेईमानी और चालबाजी दिखाने का मौका आता, वहां उस का दिमाग कंप्यूटर की तरह तेज चलता था. वह हमेशा ऐसे ही मौकों की तलाश में रहता था.

एक दिन धन्ना ने अपने 8-10 दोस्तों को खेतों में बुलाया और कहने लगा, "तुम लोगों ने कभी सिनेमा नहीं देखा है. मैं तो अपने एक रिश्तेदार के साथ पास ही के कसबे में कई बार सिनेमा देख चुका हूं. उस की बात ही कुछ और है."

धन्ना ने सिनेमा की बात लड़कों को इस तरह नमकमिर्च लगा कर बताई कि वे भी उसे देखने को बेचैन हो गए.

धन्ना उन के मन की बात जान गया था. उस ने सभी के सामने प्रस्ताव रखा, "अगर तुम लोग भी सिनेमा देखना चाहते हो, तो सौसौ रुपए का इंतजाम करो और मेरे पास ला कर जमा कर दो, फिर हम एक दिन तय कर लेंगे और शहर जा कर सिनेमा देखेंगे. वहां खूब अच्छाअच्छा खाने को भी मिलेगा."

"लेकिन सौ रुपए आएंगे कहां से?" धन्ना के एक दोस्त मनोज ने पूछा.

"इस में कौन सी बड़ी बात है. कुछ तो घर वालों से किताबों के नाम पर ले लेना और कम पड़ें, तो घर से थोड़ा अनाज वगैरह पर हाथ साफ कर देना," धन्ना ने उन्हें समझाया.

अगले ही दिन सभी लड़कों ने जैसेतैसे कर के सौसौ रुपए धन्ना के पास जमा करा दिए. सिनेमा देखने के लिए रविवार का दिन तय हुआ.

"घर वाले पूछें, तो कह देंगे कि यहीं नहर किनारे खेलने गए थे. लेकिन ध्यान रहे, रविवार को सुबह 5 बजे सभी नहर किनारे पहुंच जाना," धन्ना योजना को आखिरी रूप देते हुए बोला.

रविवार को तड़के ही धन्ना नहर पर पहुंच गया. अभी धुंधलका था. अभी तक बाकी लड़कों की नींद भी नहीं खुली थी. मनोज ने आंखें खोलीं, तब तक 5 बज चुके थे. उस ने जल्दीजल्दी कपड़े पहने और नहर की तरफ दौड़ पड़ा. रास्ते में उसे बाकी लड़के भी मिल गए.

जैसे ही वे सभी नहर पर पहुंचे, तो देखा कि धन्ना वहां बैठा हुआ जोरजोर से रो रहा था. सभी ने उस से रोने की वजह पूछी, तो धन्ना कहने लगा, "मैं ठीक साढ़े 4 बजे यहां आ गया था. अंधेरा काफी था. मैं तुम लोगों का इंतजार कर रहा था, मगर तुम में से एक भी ठीक समय पर नहीं आया.

"उसी समय 2 हट्टेकट्टे आदमी यहां से गुजर रहे थे. अकेला देख कर उन्होंने पहले तो मुझे मारापीटा और फिर सारा पैसा छीन कर भाग गए."

धन्ना बड़े ही नाटकीय अंदाज में रोतेरोते यह सब बता रहा था. यह सुन कर सभी बच्चों के चेहरे मुरझा गए.

धन्ना घड़ियाली आंसू बहाते हुए कहने लगा, "मैं ने तो पहले ही कहा था कि तुम लोग सही समय पर आ जाना. यह तो गनीमत समझो कि चोरों ने मुझे जान से नहीं मारा."

(क्रमशः)

*धन्ना की इस बेईमानी का क्या अंजाम हुआ? क्या संतू का धन्ना को बड़ा आदमी बनाने का सपना पूरा हो सका? **पढ़िए अगले अंक में...***

विधानसभा चुनाव

क्या मोदी लहर को रोक सकेंगे गुरुजी?

बीरेंद्र बरियार

लोकसभा चुनावों के बाद महाराष्ट्र और हरियाणा में हुए विधानसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी की लहर को कामयाबी मिलने के बाद झारखंड के भाजपाइयों को यकीन हो गया है कि 25 नवंबर से 20 दिसंबर तक 5 चरणों में होने वाले झारखंड विधानसभा चुनावों के नतीजों के बाद भाजपा की बल्लेबल्ले तय है. 23 दिसंबर को नतीजों का ऐलान होना है.

झारखंड राज्य में कुल 14 लोकसभा सीटों में से 12 सीटों पर जीत हासिल कर भाजपा के हौसले तो पहले से ही बुलंद हैं.

महाराष्ट्र में शिव सेना से अलग हो कर चुनाव लड़ने के बाद भी भाजपा काफी फायदे में रही और झारखंड में भी वह अपने 18 साल पुराने साथी जनता दल (यूनाइटेड) से अलग हो कर चुनाव लड़ने के लिए कमर कस चुकी है.

भाजपा ने राज्य की सभी 81 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर डाला है. हालांकि झारखंड में भाजपा को झारखंड मुक्ति मोरचा से कड़ी टक्कर मिलेगी, क्योंकि महाराष्ट्र में जिस तरह शिव सेना मराठियों के हित की सियासत करती है, उसी तरह झारखंड में झामुमो आदिवासियों की लड़ाई लड़ने का दावा करती रही है.

साल 2009 के विधानसभा चुनावों में झामुमो को 18 सीटें मिली थीं. साल 2005 के चुनावों में उसे 17 सीटों और साल 2000 के चुनाव में 12 सीटों पर जीत मिली थी. राज्य में अब तक झामुमो की मदद के बगैर न तो संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार बनी और न ही राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की. ऐसे में मोदी लहर के बीच झामुमो की अनदेखी करना भाजपा को नुकसान पहुंचा सकता है.

चुनावी गहमागहमी के बीच झारखंड और आदिवासी समाज को भूल कर हर दल के नेता अपनाअपना मतलब साधने में लग गए हैं. 'नमो' की खुमारी का यह आलम है कि लोकसभा चुनावों के बाद से ही हर दल के नेता भाजपा में शामिल होने की होड़ में लगे हुए हैं.

नेताओं की भीड़ को देखते हुए भाजपा ने आननफानन एक स्क्रीनिंग कमेटी भी बना डाली है, जो दूसरे दलों से आने वाले नेताओं की पूरी तरह से जांचपरख कर ही पार्टी के अंदर जाने की हरी झंडी दे रही है.

इस कमेटी में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र राय समेत अर्जुन मुंडा, रघुवर दास और सरयू राय शामिल हैं.

जद (यू) से नाता टूटने के बाद भाजपा उन 14 सीटों पर अपनी जमीन मजबूत बनाने में लगी हुई है, जहां पिछले 15 सालों से जद (यू) ही अपने उम्मीदवार उतारता है.

गठबंधन के तहत 14 सीटें जद (यू) के खाते में थीं. बाघमारा, पोकी, डुमरी, शिकारीपाड़ा, हुसैनाबाद, मधुपुर, बोकारो, सारठ, चंदनक्यारी, देवघर, तमाड़, विश्रामपुर, भवनाथपुर और छतरपुर सीटों पर जद (यू) ही अपने उम्मीदवार उतारता था.

साल 2009 के विधानसभा चुनावों में इन 14 सीटों में से महज 2 सीटें तमाड़ और छतरपुर पर ही जीत मिल सकी थी. इस साल होने वाले चुनावों में भाजपा इन सभी सीटों पर पार्टी को मजबूत बनाने में लग गई है.

झारखंड भाजपा के उपाध्यक्ष रहे रघुवर दास दावा करते हैं कि इस बार भाजपा को बहुमत मिलेगा और वह अपने दम पर अकेले सरकार बनाएगी. भाजपा के साथ राज्य की जनता है, इसलिए उसे किसी दल से गठबंधन करने की जरूरत ही नहीं है.

आदिवासियों के नाम पर बने झारखंड राज्य का यह कड़वा सच है कि पिछले 15 सालों में झारखंड की जनता को बेरोजगारी, घर से उजड़ने और शोषण के सिवाय कुछ नहीं मिला है और सियासी दल ऊपर ही ऊपर घालमेल कर के सरकार बनाने और गिराने का ड्रामा रच कर मलाई खाते रहे हैं.

'आदिवासियों की जमीनों के लिए पिछले कई सालों से आवाज उठा रही दायमनि बारला कहती हैं कि जनजातियों की तरक्की के लिए आजादी के बाद से ले कर अब तक की सरकारी योजनाओं का रत्तीभर भी हिस्सा उन तक नहीं पहुंच सका है. कोरबा समेत कई जनजातियां मिटने के कगार पर पहुंच चुकी हैं और किसी सियासी दल को इस बात की फिक्र नहीं है.

दूसरी ओर मोदी लहर को तगड़ी चुनौती देने के लिए झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस को एक मंच पर लाने की पुरजोर कोशिश करने में लगे हुए हैं.

अब 23 दिसंबर को चुनाव का नतीजा आने के बाद ही पता चलेगा कि झारखंड में मोदी का जादू चलता है या गुरुजी के महागठबंधन पर जनता भरोसा जताती है. ●

कांग्रेस और भाजपा ने चौपट किया झारखंड को : बाबूलाल मरांडी

झारखंड के पहले मुख्यमंत्री और झारखंड विकास मोरचा के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को यकीन है कि इस बार के चुनावों में उन्हें जनता का पूरा भरोसा मिलेगा. चुनाव के बारे में पूछने पर वे 'हम होंगे कामयाब...' का नारा लगाते हैं और समर्थक भी उन के सुर में सुर मिलाते हैं.

पिछले चुनावों में 11 सीटों पर जीत हासिल करने वाले बाबूलाल मरांडी कहते हैं कि झारखंड में मोदी लहर की हवा निकल जाएगी. क्योंकि राज्य के आदिवासियों की हालत बद से बदतर होती जा रही है और उन के अलावा कोई दल आदिवासियों के बारे में बात नहीं कर रहा है.

पिछले दिनों हजारीबाग के छड़बा डैम के पास हुए पार्टी के 2 दिनी महाधिवेशन में तकरीबन 30 हजार प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था. बाबूलाल मरांडी कहते हैं कि केंद्र सरकार ने झारखंड को प्रयोगशाला बना कर रख दिया है, जिस से राज्य और यहां की जनता का बेड़ा गर्क हो रहा है. जब तक आदिवासियों को इंसाफ और तरक्की देने वाली टिकाऊ सरकार नहीं बनेगी, तब तक न झारखंड का भला होगा और न ही आदिवासियों का.

बाबूलाल मरांडी गुस्से में कहते हैं कि कांग्रेस और भाजपा ने मैच फिक्सिंग कर के झारखंड को बरबाद कर डाला है. इन चुनावों में जनता दोनों को सबक सिखाएगी.

वे कहते हैं कि उन की पार्टी इस बार किसी भी सियासी दल से गठबंधन किए बगैर ही चुनाव में उतरेगी और दोतिहाई बहुमत से जीतेगी. अगर उन की पार्टी सत्ता में आई, तो सब से पहले सभी घोटालेबाजों को जेल की सलाखों के पीछे भेजेगी.

जमाई की ससुराल में टांग अड़ाई

सुनील शर्मा

दीपक की 2 बड़ी बहनें थीं. उन तीनों ही भाईबहनों की शादी हो चुकी थी. कुछ दिनों के बाद दीपक के साले की शादी होनी थी.

एक दिन दीपक अपने छोटे जीजाजी के पास गया और उन से हाथ जोड़ कर बोला, "जीजाजी, आप तो जानते ही हैं कि मेरे साले प्रदीप की शादी होने वाली है. वह मेरा एकलौता साला है और उस के परिवार वाले चाहते हैं कि मैं इस शादी में आप को और बड़े जीजाजी को भी न्योता भेजूं."

यह सुन कर दीपक के छोटे जीजाजी ने कहा, "यह तो बहुत खुशी की बात है कि वे हमें भी न्योता दे रहे हैं. लेकिन यह बात बताते हुए तुम्हारे माथे पर चिंता की लकीरें क्यों उभर आईं?"

दीपक बोला, "मुझे बड़े जीजाजी को यह न्योता देते हुए झिझक हो रही है. साफ कहूं तो डर लग रहा है और मन से मैं उन्हें बुलाना भी नहीं चाहता."

"इस की क्या वजह है?" दीपक के छोटे जीजाजी ने पूछा.

"आप तो जानते ही हैं कि जब भी बड़े जीजाजी हमारे घर आते हैं, तो चाहे काम हो या न हो, मुझे नौकर की तरह उन के आगेपीछे घूमना पड़ता है.

"अगर उन की खातिरदारी में जरा सी भी चूक हो जाए, तो वे वापस जा कर बेवजह दीदी को तंग करते हैं. उन्हें बूढ़ी औरतों की तरह ताने सुनाते हैं.

"अगर मैं उन्हें शादी में बुलाऊंगा, तो वे वहां भी चाहेंगे कि मैं उन की जीहुजूरी में लगा रहूं. मैं अपने साले की शादी में मजे करूंगा या अपने जीजा की आवभगत में लगा रहूंगा? आप ही बताइए कि मैं क्या करूं?"

दीपक के छोटे जीजाजी अपने साढ़ू का मिजाज जानते थे. दीपक सौ फीसदी सच कह रहा था.

उन्होंने कुछ सोच कर दीपक से कहा, "दीपक, इस का एक इलाज है कि तुम हम दोनों में से किसी को भी न्योता मत दो. मुझे इस बात का बिलकुल बुरा नहीं लगेगा. जब हम दोनों को ही न्योता नहीं आएगा, तो तुम्हारे बड़े जीजाजी भी शांत रहेंगे."

दीपक को अपने छोटे जीजाजी की सलाह पसंद आई और उस ने अपने साले की शादी वाले मामले को वहीं दबा दिया.

यह तो महज एक मिसाल थी. सच कहें, तो हमारे समाज में रोजाना न जाने ऐसे कितने किस्से होते हैं, जिन में जमाई की वजह से उन की ससुराल में बेवजह का तनाव रहता है.

जिस जमाई का अगर ससुर नहीं होता है, तो वहां तो वह तानाशाह जैसा बरताव करता है. वहां के हर मामले में आखिरी फैसला उसी का होना चाहिए, नहीं तो उसे मुंह फुलाने में ज्यादा देर नहीं लगती है.

साले की नौकरी का सवाल हो या साली की शादी का मामला, ऐसा जमाई चाहता है कि ससुराल में उस की ही चले. कुछ जमाई तो ससुराल वालों पर इतने हावी होने लगते हैं कि वहां कौनकौन आना चाहिए, इस पर भी अपनी एकतरफा राय देने से बाज नहीं आते हैं.

ऐसे जमाई से ससुराल वाले इतने घबराए से रहते हैं, मानो उन के आते ही वहां धारा 144 लग गई हो. हर कोई उन की खातिरदारी में तैनात. जरा सी चूक हुई नहीं कि ससुराल में भूचाल का सा माहौल हो जाता है.

सवाल उठता है कि जो शख्स अपने घर में साधारण सी जिदगी जी रहा होता है, वह ससुराल में पहुंचते ही किसी राजा की तरह बरताव क्यों करने लगता है?

दरअसल, इस के पीछे वह मर्दवादी सोच काम करती है, जिस ने हमारी रगों में भर दिया है कि बेटी देने वाला जिंदगीभर हाथ जोड़े रहेगा. जमाई नकारा हो, ऐबी हो, अपनी पत्नी पर जुल्म करता हो, लेकिन वह ससुराल में पूजे जाने लायक है.

शादी में दहेज मिलने के बाद ऐसे जमाई के मन में यह चाहत रहती है कि जब भी वह ससुराल जाए, तो उस की जेब भर जाए. जब कभी ऐसा नहीं होता या मनचाही मुराद पूरी नहीं होती है, तो वह अपनी पत्नी को तंग करता है, जिस से ससुराल वाले फिर उस के सामने हाथ जोड़े नजर आते हैं.

लेकिन क्या ऐसे जमाई को ससुराल में वाकई इज्जत मिलती है? बिलकुल नहीं. चाहे उस के ससुराल में आने पर वहां उस की आवभगत के लिए अफरातफरी मच जाती हो, लेकिन ज्यादातर लोगों के मन में यही भाव रहते हैं कि जल्दी से इस से पीछा छूटे और वे चैन की सांस लें.

इज्जत किसी के ऊपर दबाव डालने से नहीं मिलती है, बल्कि वह तो अपने अच्छे बरताव से कमाई जाती है. यह बात जमाई पर भी लागू होती है. ससुराल को अपनी मौजमस्ती का अड्डा न समझ कर, बल्कि अगर उसे पत्नी का घर समझ कर वहां जाएंगे, तो तानाशाह जमाइयों को भी वही इज्जत मिलेगी, जिस के वे वाकई हकदार होते हैं.

लिहाजा, जमाई को अपनी ससुराल में उतनी ही सलाह देनी चाहिए, जितनी उस से मांगी जाए. इस से हो सकता है कि उस की सलाह मान भी ली जाए. लेकिन जब भी वह हर मामले में टांग अड़ाएगा, तो अपनी इज्जत को खोने के सिवा उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा. ●

कहानी

प्रेरणा

मीनू त्रिपाठी

सामने बने बड़े से मौल को देखती सुकेशी सोचती जा रही थी कि चाहे इनसान हो या कोई शहर, समय के साथ उस में बदलाव आ ही जाता है. कई साल पहले जब वह अपने पति सुबोध के साथ इस शहर में आई थी, तो यहां एक छोटा सा बाजार हुआ करता था, पर आज यह एरिया पौश कहलाता है.

सुकेशी 15-16 साल बाद दोबारा सुबोध के साथ इस शहर में आई थी.

उस ने यादों में बसे पुराने घर को देखने की इच्छा जाहिर की थी, लेकिन वहां जाने पर पता चला कि पुरानी गलियां गुम सी हो गई थीं. उन की जगह दोमंजिलातिमंजिला मकानों ने ले ली थी.

यादों में खोई सुकेशी किसी की आवाज पर चौंकी. ऐसा लगा, मानो कोई बुला रहा है.

उस ने पलट कर देखा, तो पीछे भीड़ में अधेड़ उम्र की एक औरत उसे पुकार रही थी.

जब तक वह उस पर ध्यान देती, तब तक सुबोध गाड़ी ले कर आ गए और बोले, "सुकेशी, जल्दी बैठो. नहीं तो..."

सुकेशी गुमसुम सी कार में बैठ गई, फिर बोली, "जरा रुको, मुझे कोई बुला रहा है."

सुबोध ने पलट कर देखा. वे हंसते हुए बोले, "कोई नहीं है. भला इतने सालों के बाद हमें कौन पहचानेगा? मैडम, अब और कहां जाना चाहती हैं?"

सुकेशी हंस कर बोली, "सुबोध, मैं अपना पुराना स्कूल देखना चाहती हूं."

सुबोध भी हंस कर बोले, "अब तो उसे रोज ही देखना है... आज हम बस यों ही घूमेंगे."

सच... कितना रोमांचक है सुकेशी के लिए उस स्कूल में प्रिंसिपल के पद को संभालना, जिस में उस ने कभी सालों पहले टीचर के रूप में काम किया था.

तब वह स्कूल नयानया ही बना था. सुबोध और सुकेशी इस शहर में पहली बार आए थे. बच्चों का दाखिला उसी स्कूल में करवा कर सुकेशी ने भी टीचर के रूप में वहीं नौकरी कर ली थी.

4-5 साल तक इस शहर में रहने के बाद सुबोध के तबादला हो जाने की वजह से दिल्ली जाना पड़ा. अब दोनों बच्चे वहीं सैटल हो गए हैं.

सुबोध का दोबारा इसी शहर में तबादला होना और सुकेशी को औनलाइन द्वारा स्कूल में प्रिंसिपल के पद पर नौकरी मिलना एक इत्तिफाक ही था.

हालांकि सुकेशी को 10 दिन बाद स्कूल में अपना पद संभालना था, लेकिन मिसेज अब्राहम, जो अभी प्रिंसिपल थीं, ने अभी से सुकेशी को स्कूल आने को कह दिया था, ताकि वह अच्छे से स्कूल का कामकाज समझ सके.

दूसरे दिन सुकेशी का स्कूल में गर्मजोशी से स्वागत किया गया.

आज कुछ नई टीचरों को चुनने के लिए इंटरव्यू भी था. मिसेज अब्राहम ने सुकेशी से इंटरव्यू लेने के लिए कहा और नई प्रिंसिपल के रूप में उस का परिचय देते हुए इंटरव्यू शुरू किया.

प्रेरणा नाम की एक लड़की ने सुकेशी का ध्यान अपनी ओर खींचा था. वह काफी खूबसूरत लग रही थी. आंखों में काजल और माथे के बीचोंबीच छोटी सी बिंदी लगाए उस पतली सी लड़की की आवाज में जादू था.

"मुझे ऐसा लगता है कि प्रेरणा टीचर की जिम्मेदारी बखूबी निभा पाएगी," सुकेशी ने अपनी राय दी, तो साथ बैठे दूसरे सदस्यों की आंखों में प्रेरणा को चुनने की खुशी थी.

दूसरे दिन सुकेशी जैसे ही स्कूल पहुंची कि एक बार फिर किसी की आवाज उस के कानों में पड़ी. पलट कर देखा, तो एक औरत दौड़ती हुई आई और उस के पैरों में गिर पड़ी.

सुकेशी को लगा कि यह तो कल वाली औरत दिखती है. वह हड़बड़ा कर बोली, "अरे, कौन हैं आप?"

सुकेशी को यों अपनी ओर ताकता देख वह बोली, "मेमसाहब, मैं ने आप को कल कितना पुकारा. आप ने तो मुझे पहचाना ही नहीं... मैं कजरी."

"कजरी... कौन कजरी?" सुकेशी की आंखें हैरानी से फैली देख कर वह औरत खुद को संभालते हुए बोली, "मेमसाहब, आप को मेरी बेटी चन्नी याद है न... आप इसी स्कूल में तो थीं, जब यह स्कूल बन रहा था. मैं यहां मजदूर थी..."

सुकेशी की हैरानी को देख कजरी आगे बोली, "चन्नी का दाखिला आप ने ही तो कराया था मेमसाहब. हम आप का वह एहसान जिंदगीभर नहीं भूल सकते. आज वही चन्नी इस स्कूल में टीचर बनने जा रही है.

"पिछले साल ही उस ने बीऐड किया था. कल ही उस का इंटरव्यू हुआ था. प्रेरणा... यह नाम आप ने ही तो उसे दिया था."

"ओह, कल जो प्रेरणा आई थी, वह तुम्हारी बेटी है?" सुकेशी ने पूछा.

अचानक यादों के पन्ने इधरउधर से आ कर गिरने लगे.

सुकेशी को याद आया वह दिन, जब वह इस स्कूल में नईनई आई थी.

छात्रों की तादाद बढ़ने से कुछ नई क्लासें बनाने का काम शुरू किया गया था. दिनभर काम चलता रहता था. कुछ मजदूर औरतें व उन के बच्चों का जमावड़ा पीछे लगा रहता था. क्लासें बिना किसी शोरशराबे के चलती रहें, इस बात का ध्यान भी रखा जाता था.

स्कूल के बाहर थोड़ी दूर पर ही खुले अहाते में मजदूर औरतों का डेरा था. सुकेशी जब भी आतीजाती थी, तब एक राजस्थानी वेशभूषा पहने 35-36 साल की औरत पर जाने क्यों उस की नजरें टिक जातीं थीं.

वह औरत अपने 2 बच्चों के साथ स्कूल में दिखाई देती थी. लड़की की उम्र 6 साल की होगी और उस का भाई 2 साल का था. कपड़े मैलेकुचैले व

बाल रूखे से थे. चेहरे पर धूलमिट्टी के निशान रहते थे. हां, लड़की के कानों में लटकते बुंदे अच्छे लगते थे.

एक दिन सुकेशी ने उस बच्ची का नाम पूछ लिया, तो वह ठिठक सी गई. उस की मां ने जोर से कहा था, 'अरी बोल री अपना नाम...'

वह लड़की मुश्किल से बोल पाई थी, 'चन्नी.'

सुकेशी को लड़की का नाम अजीब सा लगा, तभी उस ने चन्नी की मां को इतने बड़े बुंदे न पहनाने की सलाह दे डाली थी, 'कान कट जाएंगे.'

यह सुन कर उस की मां ने हामी भर दी थी.

दूसरे दिन जब सुकेशी स्कूल आई, तो उसे चन्नी में कुछ बदलाव लगा था. कपड़े वही थे, पर साफ थे. कानों से वह बड़ी लटकन गायब थी. उस की जगह छोटेछोटे टौप्स थे.

सुकेशी चन्नी को देख कर मुसकरा दी थी. अब वह आतेजाते अकसर उसे टौफी पकड़ा देती थी या कभी घर से कोई खाने की चीज उसे ला देती थी.

चन्नी की मां का नाम कजरी था. उस ने बताया था कि उस का पति एक शराब की फैक्टरी में काम करता है और वह रोज की दिहाड़ी कमा कर अपने परिवार को पाल रही है.

सुकेशी को कजरी की आंखों में हमेशा एक सपना सा तैरता नजर आता था. जब सारे मिस्त्रीमजदूर खाना खा कर आराम कर रहे होते थे, तो वह अपने बच्चों के साथ क्लास के बाहर बरामदे में उकड़ू बैठ जाती थी और ध्यान लगा कर चल रही क्लास में से आती आवाज को सुनती थी.

कभीकभी स्टाफ का कोई सदस्य राउंड पर होता और उसे देख लेता, तो डांटडपट कर भगा देता था, पर वह बाज नहीं आती थी.

एक दिन सुकेशी ने यों ही कजरी से कह दिया था, 'कजरी, चन्नी को अपनी तरह न बनाना, इसे स्कूल भेजना.'

कजरी की आंखों के सपने मानो पानी बन कर तैर गए. इसी तरह 2 महीने बीत गए. कंस्ट्रक्शन का काम भी पूरा हो गया था. शनिवार व रविवार की छुट्टी के बाद स्कूल खुला, तो सबकुछ व्यवस्थित, पर खालीखाली सा लगा.

दूसरे दिन जब सुकेशी स्कूल पहुंची, तो उसे सुबहसुबह सुखद हैरानी हुई. कजरी, चन्नी और उस का भाई बाबुल सामने खड़े थे. कजरी हाथ जोड़े हुए थी, मानो कुछ कहना चाहती हो.

सुकेशी ने सवालिया नजरों से उसे देखा, तो वह चन्नी का हाथ पकड़ कर पास आ गई और तकरीबन उस के पैरों पर झुक गई.

यह देख कर सुकेशी हड़बड़ा गई थी. कजरी रुंधे गले से बोली, 'मेमसाहब, मेरी चन्नी को अपनी क्लास में बैठा लो. यह एक कोने में बैठी रहेगी, बिलकुल तंग नहीं करेगी.

'मेमसाहब, मैं बड़ी उम्मीद ले कर आप के पास आई हूं. इस चन्नी के लिए आप जरूर कुछ करना,' इतना कह कर कजरी चली गई.

आज सुकेशी बैग में पड़ी टौफी चन्नी को नहीं दे पाई थी. घर आ कर भी वह अनमनी सी रही.

दूसरे दिन जब वह स्कूल पहुंची, तो कजरी बच्चों समेत पेड़ के नीचे बैठी दिखी.

सुकेशी को देख कर वह जल्दी से खड़ी हो गई, तो उस ने उसे वहीं से बैठे रहने का संकेत दिया, फिर थोड़ी ही देर में कुछ निश्चय कर के सुकेशी प्रिंसिपल मिसेज अब्राहम के पास जा पहुंची. वहां पहुंच कर सुकेशी ने कजरी और चन्नी की बात उन के सामने रखी.

मिसेस अब्राहम नें पूरी बात सुनी. कुछ परेशानी के बाद सुकेशी उन्हें आश्वस्त करने में कामयाब रही.

दूसरे दिन सुकेशी अपनी एक पुरानी साड़ी व अपनी बेटी की पुरानी फ्रौक ले कर आई और स्कूल में कजरी को दे दी. दोनों मांबेटी उन पुराने कपड़ों में सजधज कर आईं, तो उन्हें पहचानना मुश्किल था.

सुकेशी उन्हें प्रिंसिपल के पास ले गई. वे भी उन मांबेटी के संकल्प से प्रभावित हुईं. तय हुआ कि कजरी इसी स्कूल में आया का काम करेगी व चन्नी को नर्सरी में दाखिला मिल गया था.

सुकेशी ने उस का चन्नी नाम बदल कर 'प्रेरणा' रख दिया था.

कजरी के स्वभाव को देखते हुए सुकेशी ने उसे अपने घर के पीछे बने कमरे में रख लिया था. कजरी वहां आराम से बच्चों के साथ रहती और सुकेशी का काम में हाथ बंटाती.

कजरी का पति रतन नशे में जबतब कजरी को पीट देता था. यह बात सुबोध की भी बरदाश्त से बाहर हो रही थी.

एक दिन कजरी ने खुद ही कह दिया, 'मेमसाहब, आप ने हमारे लिए बहुतकुछ किया है. रतन की वजह से मैं आप को परेशान नहीं देख सकती...'

'लेकिन तुम अपने बच्चों को ले कर कहां जाओगी? तुम्हारे खुद के बच्चों पर भी तो अच्छा असर नहीं पड़ रहा है.'

बहुत सोचविचार के बाद सुबोध ने एक सामाजिक संस्था की मदद से रतन को नशा मुक्ति केंद्र भेजने का फैसला किया.

कुछ महीने बाद सुबोध का तबादला दूसरे शहर में हो गया. सुकेशी ने जाने से पहले कजरी को किराए पर एक मकान दिला दिया था.

सुकेशी अपनी यादों से बाहर निकल आई थी.

कजरी ने बताया, "मेमसाहब, आप के जाने के बाद मैं ने घर पर ही अचारपापड़ बनाने का काम शुरू कर दिया था. आप के घर काम करतेकरते मैं ने बहुतकुछ सीखा था.

"रतन भी 6 महीने बाद लौट आया था. उस की शराब पीने की लत छूट चुकी थी.

"मुझे मेहनत करते देख उसे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास होने लगा था. रतन ने इस बार मेरा पूरा साथ दिया.

"बच्चों को पढ़ाने के जुनून ने मुझे एक मशीन बना डाला था. मेरा अब एक ही मकसद था कि कैसे भी कर के अपने बच्चों को आगे पढ़ाना है."

तभी सुकेशी की नजर प्रेरणा पर पड़ी. प्रेरणा कांपते शब्दों में बोली, "क्या हम लोग आप का यह कर्ज कभी चुका पाएंगे?"

सुकेशी ने आशीष भरा हाथ प्रेरणा के सिर पर रख दिया और बोली, "हां... शिक्षा की एक किरण किसी और जरूरतमंद इनसान को दे कर..." और उसे अपने गले से लगा लिया.

कजरी का गला भर आया था. सुकेशी ने उस का कांपता हाथ थाम कर उसे भी गले से लगा लिया. ●

गलत है नादान उम्र में सैक्स

मदन कोथुनियां

☛ एक दस्तावेज के मुताबिक, भारत में 16 साल से कम उम्र वाले 13 फीसदी बच्चों को सैक्स का तजरबा है. शादी से पहले सैक्स के मामले गंवई इलाकों के बजाय शहरों में ज्यादा हैं.

☛ भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा सैक्स संबंधी जानकारी को ले कर 20 हजार बच्चों पर किए गए सर्वे के आंकड़े बेहद चौंकाने वाले हैं.

डाक्टर विमल राय के मुताबिक, 'लगता है कि हमारे बच्चे बहुत कम उम्र में बहुत ज्यादा सैक्स करने लगे हैं.'

☛ जयपुर के ज्योतिबा फूले शिक्षण संस्थान ने पाया कि 14 साल से 16 साल तक की उम्र वाले एक हजार बच्चों में से 35 फीसदी लड़के और 27 फीसदी लड़कियां सैक्स कर चुके थे.

☛ जयपुर, कोटा व अजमेर के 50 स्कूलों में छात्राओं पर सर्वे कराया गया था, जिन की उम्र 14 साल से 16 साल थी. इन में से 17 फीसदी छात्राएं सैक्स का अनुभव कर चुकी थीं और 22 फीसदी छात्राओं के एक से ज्यादा साथी थे.

आज 14 साल से 16 साल तक की उम्र के बच्चे न केवल ज्यादा से ज्यादा सैक्स की जानकारी जमा करने में जुटे हैं, बल्कि सैक्स को ले कर नएनए प्रयोग भी कर रहे हैं.

नादान उम्र के लड़केलड़कियों में सैक्स के बारे में अधकचरी व अधूरी जानकारी होती है. यही वजह है कि इस के प्रति उन की चाहत लगातार बढ़ रही है और वे सैक्स ज्यादा करने लगे हैं.

गंवई व स्कूल न जाने वाली किशोर उम्र की लड़कियों में सैक्स संबंध बनाने की तादाद ज्यादा है. इन लड़केलड़कियों को परिवार नियोजन के बारे में सब से ज्यादा जानकारी कंडोम की है. इन गंवई इलाकों की 61.03 फीसदी लड़कियों ने सैक्स का अनुभव ले लिया.

स्कूल नहीं जाने वाली 67 फीसदी लड़कियां भी सैक्स का अनुभव ले चुकी हैं, जबकि स्कूल जाने वाली लड़कियों में यह अनुभव 54 फीसदी पाया गया.

इन में से 26 फीसदी लड़कियों ने कहा कि उन्होंने अपनी मरजी से सैक्स किया था, जबकि 22 फीसदी मामलों में उन पर दबाव डाला गया.

इन लड़कियों में 55 फीसदी ने माना कि पहले सैक्स में उन का पार्टनर दोस्त था, जबकि 41 फीसदी मामलों में उन के साथी उन के करीबी व दूर के रिश्तेदार थे और 12 फीसदी मामलों में इन का सैक्स पार्टनर उन दोनों के अलावा था.

सर्वे में एक जानकारी यह भी मिली कि 14.27 फीसदी लड़कियां सैक्स के मामलों में दूसरे लोगों से बातचीत कर लेती हैं, जबकि मांबाप से इस मामले में सिर्फ डेढ़ फीसदी लड़कियां ही बातचीत करती हैं.

गंवई इलाकों के मांबाप का कहना है कि शादी से पहले सैक्स संबंध व पेट गिराने के मामले ज्यादा बढ़े हैं, चूंकि उन्हें खुद भी सुरक्षित सैक्स के बारे में सही जानकारी नहीं होती, इसलिए वे अपने बच्चों को इस बारे में कोई सही जानकारी नहीं दे पाते.

कमसिन उम्र में नादानियां

एक कमसिन उम्र नादान प्रेम की तमाम फंतासियों के साथ प्रेम की दुनिया में दाखिल होती है, लेकिन बदले में पाती हैं पेट का गिराना, रेप व फिर मौत.

कमसिन उम्र की इस गली में आ कर तथाकथित प्रेम कुछ भटक सा जाता है. बेशक, शुरुआत यहां भी खूबसूरत लफ्ज 'आई लव यू' से ही होती है, लेकिन नासमझी उन्हें सैक्स की ऐसी अंधेरी सुरंग में ले जाती है, जो आगे कहीं नहीं खुलती.

दुनिया की नजरों से छिप कर किए गए इस कमसिन उम्र के नादान प्रेम का नतीजा गलत ही होता है. नासमझ उम्र की नाजुक देह भी इस अधकचरे प्रयोग को सह नहीं पाती. नजीजतन, या तो जान चली जाती है या फिर वह कच्ची देह खुद जान दे बैठती है. नहीं तो वह ऐसी खतरनाक दुनिया का हिस्सा बन जाती है, जहां वह एक हाथ से दूसरे हाथ का खिलौना बन जाती है.

जयपुर के मानसरोवर थाना इलाके में नाबालिग की पेट गिराने के बाद हुई मौत की खबर जिस ने भी सुनी, वह दहल गया.

मानसरोवर थाना पुलिस के मुताबिक, 22 मई, 2014 की देर रात 2 बजे लावारिस हालत में 15 साल की एक किशोरी की जबरन पेट गिराने के बाद मौत हो गई.

मालवीय नगर का रहने वाला सुमित व उस के पड़ोस में ही रहने वाली हेमलता पिछले एक साल में कई बार सैक्स संबंध बना चुके थे. असुरक्षित सैक्स संबंध बनाने से हेमलता पेट से हो गई थी.

यह बात पता चलने पर सुमित उसे एक प्राइवेट क्लिनिक पर ले गया, जहां हेमलता को पेट गिराने वाली गोलियां दे दी गईं. फिर सुमित हेमलता को मानसरोवर इलाके में ले आया.

गर्भपात के दौरान तेज दर्द से हेमलता जोरजोर से चीखनेचिल्लाने लगी. इस से घबरा कर सुमित उसे मानसरोवर के सुनसान इलाके में छोड़ कर भाग गया, जहां दर्द व ज्यादा खून बहने से तड़पते हुए हेमलता की मौत हो गई.

जयपुर के एक स्कूल में पढ़ाने वाली टीचर मीना वर्मा बताती हैं कि एक दिन उन्होंने 8वीं के 2 बच्चों को कमरा बंद कर एकदूसरे को चूमते हुए पकड़ा.

लड़की को तो उन्होंने डांटडपट कर यह सोच कर छोड़ दिया कि लड़कियों के मातापिता ज्यादा भावुक होते हैं. गुस्से में आ कर कुछ भी कर बैठते हैं. मगर लड़के के मांबाप को बुलाया और पूरे मामले का ब्योरा दिया. इस पर उलटे उन्होंने टीचर को ही रूढ़िवादी कह कर कोसा और कहने लगे कि इस उम्र में यह सब होना स्वाभाविक है, आप इतनी परेशान क्यों हो रही हैं?

आज सैक्स संबंधी सूचनाओं के लिए बच्चों को दरदर भटकने की जरूरत नहीं है. सैक्स संबंधी हर नईपुरानी जानकारी घर बैठे उन्हें टैलीविजन और इंटरनैट पर मुहैया हैं. उत्तेजक फिल्में, धारावाहिकों के साथसाथ इंटरनैट पर ब्लू फिल्में व कामुक तसवीरें बच्चों की सैक्स संबंधी जिज्ञासाओं के लिए सोने पे सुहागा का काम कर रही हैं.

सैक्स संबंधी आधीअधूरी जानकारी हर वक्त बच्चों के दिमाग में दर्ज रहती है और मौका मिलते ही इन में से कई बच्चे सैक्स का प्रयोग करने लगते हैं.

12 साल से 17 साल के लड़के व लड़कियों की उम्र चुनौती भरी होती है, खासतौर से लड़कियां सेहत, दिमागी व जज्बाती रूप से कई तरह के बदलावों से हो कर गुजरती हैं. उन की बहुत सी जज्बाती जरूरतें भी होती हैं, इसलिए कदम बहकने का डर ज्यादा रहता है.

इस का फौरी तौर पर हल क्या होगा, यह बताना मुश्किल है, लेकिन जिन मुद्दों पर मां बात नहीं करती हैं और स्कूल में टीचर चुप्पी साधे रहते हैं, जिन मुद्दों पर फुसफुसाहटों और उठी हुई उंगलियों के अलावा देखनेसुनने को कोई नहीं मिलता, उन मुद्दों पर किशोर लड़केलड़कियों से बातचीत करना जरूरी है.

नादान उम्र का सैक्स रुक सकता है, बशर्ते मांबाप, स्कूल, अस्पताल व थाने हमदर्द बनें.

डाक्टर योगिता त्यागी कुछ स्कूलों में बच्चों को सैक्स ऐजुकेशन देने जाती हैं. उन का कहना है, "बच्चों के मन में सैक्स को ले कर ढेरों सवाल हैं. जरूरत है उन सवालों को सही दिशा देने की.

"मैं जब भी कोई क्लास लेने जाती हूं, सब से पहले मैं बच्चे के चेहरे को पढ़ने की कोशिश करती हूं. हर चेहरे पर यही सवाल होता है कि सैक्स के लिए सही उम्र क्या है? सैक्स हमारे लिए क्यों जरूरी है? गर्भ निरोधक क्या होता है? वगैरह.

"आम टीचर भी बच्चों से सैक्स ऐजुकेशन के बारे में बातचीत करते हुए उलझन महसूस करते हैं. यही वजह है कि हमारे यहां सैक्स ऐजुकेशन देने वाले टीचरों की भारी कमी है." ●

कहानी

नीची निगाह

बृज मोहन

जयकरन में दूर तक भागने की ताकत थी, पर तेजकुमारी दूर तक भागने देती तब न. वह छोटी दौड़ की खिलाड़ी थी और जयकरन लंबी दौड़ का खिलाड़ी. वह उस से तेज दौड़ सकती थी. उन का प्यार भागादौड़ी के बीच नहीं पनपा था. उन्होंने देखपरख कर प्यार किया था. अब वे प्यार की मंजिल शादी के रूप में पाना चाहते थे. बिना बाधा का सजातीय प्रेम विवाह.

प्यार की खिचड़ी उन दोनों के बीच पक रही थी, यह बात घर वालों को मालूम थी. बिरादरी एक होने से लगता था कि एतराज की कोई बात नहीं है. दोनों के घर वालों के बीच खुल कर अभी कोई बात नहीं हुई थी.

कुछ बातें थीं. जैसे दोनों के प्रदेश अलग थे, दूरदूर के रहने वाले थे, बीच में बड़ी नदियां और पहाड़ होने से उन के परिवारों की संस्कृति, रहनसहन और सोच में फर्क था. हिंदी भाषी होने पर भी बोली में फर्क था.

उन की शादी में पहला रोड़ा अटका. तेजकुमारी के पिता चैनसुख गांव के प्रधान के लड़के की बरात में गए, तो उन की बेटी ने फोन कर के कहा, "आप चंपतपुर जा रहे हैं, तो वहां जयकरन के पापा से मिल लीजिएगा. वे वहां की पुलिस चौकी में कांस्टेबल हैं. उन का नाम धनराज है. वे आप से बात करना चाहते हैं."

धनराज ने पहली मुलाकात में खुश होते हुए चैनसुख से कह दिया, "जो आप देंगे, वह तो देंगे ही. उस के अलावा 5 लाख रुपए नकद चाहिए और शादी यहीं करनी पड़ेगी."

चैनसुख धनराज का मुंह देखते रह गए.

चैनसुख को चुप देख कर धनराज ने बात आगे बढ़ाई, "आप को तो पता ही है कि मेरा लड़का खेल कोटे से पुलिस में है. खेल की वजह से तरक्की कर के वह जल्दी ही दारोगा बन जाएगा. हमारे पास पुश्तैनी खेती भी है.

"हमारी तरफ तो जब लड़का कुछ नहीं करता, तब भी लोग 3-4 लाख गिनवा लेते हैं. आप कितने तक सोच कर आए हैं?"

"मैं तो कुछ भी सोच कर नहीं आया हूं और न ही हमारी तरफ ऐसा कोई चलन है," चैनसुख ने धनराज को सीधा सा जवाब दिया और बिना कोई बात आगे बढ़ाए चले आए.

घर आ कर चैनसुख ने अपनी पत्नी को धनराज के लोभ के बारे में बताया, तो पत्नी का सीधा जवाब था, "ऐसी जगह बेटी की शादी करना ठीक नहीं. हम तो वैसे भी पुलिस वालों से रिश्ता करना पसंद नहीं करते और वह भी इतनी दूर. उस तरफ दहेज का चलन है. क्या पता, बेटा भी लालची हो?"

तेजकुमारी छोटी दौड़ की उभरती हुई धाविका थी. आजकल वह भोपाल के स्पोर्ट्स होस्टल में रह कर बेहतरी के लिए ट्रेनिंग ले रही थी. सर्दियां शुरू हो जाने के चलते वह एक दिन के लिए घर आ रही थी. उसे गरम कपड़े लेने थे.

तेजकुमारी को पूरी बात बताते हुए चैनसुख ने पूछा, "क्या इतनी कीमत है जयकरन की? हमारी तो हैसियत नहीं है उसे खरीदने की."

पिता की बातें सुन कर तेजकुमारी को भरोसा नहीं हुआ. भरोसा करती भी कैसे? जयकरन की ओर से कभी ऐसी कोई बात नहीं आई थी. उन के बीच तो प्यार चल रहा था. बस, प्यार. सिर्फ एकदूसरे को पाने की चाह.

तेजकुमारी में पिता की तरह सब्र था. दिनभर वह शांत रही. उस ने रात में जयकरन को फोन मिलाया, तो वह पूछ बैठी, "सो गए थे क्या?"

"हां, थक गया था. आज कुछ ज्यादा प्रैक्टिस हो गई. दिल्ली जीतनी है न."

"यहां आग लगी है और आप वहां चैन की नींद सो रहे हैं."

"आग...?"

"हां, आग. आप को पता है, मेरे पिताजी झुलस गए हैं."

"कैसे?"

"पिताजी चंपतपुर गए थे. वहां आप के पिताजी ने उन्हें दहेज के दावानल में झोंक दिया. वे बुरी तरह आहत हैं," तेजकुमारी धाविका थी, तीरंदाज नहीं, लेकिन उस ने तीखे तीर छोड़ दिए.

यह सुन कर जयकरन चुप रह गया. तीर निशाने पर लगा था. कोई आह या कराह नहीं निकल पाई.

"चुप क्यों हो गए? खैर, चुप ही रहो, तो अच्छा है. मैं एसएमएस कर रही हूं. रातभर का समय है. सुबह तक मुझे जवाब चाहिए... गुड नाइट."

सुबह तक जयकरन का कोई जवाब नहीं मिला. तेजकुमारी को वापस जाना था. उसे अगले 3 महीने बाद दिल्ली में होने वाले गेम की तैयारी में जुटना था.

चलते समय मां ने समझाया, "बेटी, उस का पीछा छोड़ो. तुम होनहार हो, आगे बढ़ो. तुम अच्छी नौकरी पा सकती हो. अच्छे लोगों में तुम्हारी शादी हो सकती है. उस की तरफ दहेज का ऐसा ही चलन है. हम लोग पार नहीं पा सकेंगे."

तेजकुमारी पूरे सफर में सोचती रही. वह जयकरन का जवाब न मिलने से परेशान थी. होस्टल पहुंच कर रात में उस ने जयकरन को दूसरा एसएमएस भेजा, 'मैं समझ रही थी कि आप मुफ्त में मिल रहे हैं. खेल जीवन की उम्र थोड़े समय की होती है. अगर समय रहते जीत गए तो जीत गए, वरना हार ही गले लगानी पड़ती है. कीमतों पर टिका प्यार ज्यादा नहीं टिक सकता. ऐसे प्यार को मरते देर नहीं लगती.

'क्या आप अपने पिता की मांग को ठीक समझते हैं? मुझे आप का जवाब चाहिए. जल्दी. अगर आप ने मुझे ताकत नहीं दी, तो मैं अपने मांबाप से विरोध नहीं कर पाऊंगी. मंजिलें और भी हैं.'

एक अच्छे खिलाड़ी की तरह गेंद दूसरे के पाले में डाल कर उसे संतोष मिला. सफर की थकान थी ही, उसे गहरी नींद आई.

सुबह एसएमएस की टोन से उस की नींद टूटी. मोबाइल फोन पर जयकरन का संदेश था, 'मैं ने पिताजी से साफसाफ कह दिया है कि शादी तेजकुमारी से ही करूंगा, चाहे आप की मांग पूरी हो या न हो. मेरा फैसला अटल है.'

तेजकुमारी को लगा कि आज की सुबह अच्छा दिन ले कर आई है. वह जोश से भर उठी.

दिल्ली के गेम्स में उन दोनों ने मैडल जीते.

बेटे की जिद की वजह से धनराज मान तो गए, लेकिन परेशानियों से घिरे थे. वे अपने दोस्त दिनकर से मिले.

दिनकर ने उन्हें समझाया, "अच्छा है कि आप मान गए, नहीं तो लड़का व लड़की खुद शादी कर लेते तो क्या करते. वह अपनी बिरादरी की लड़की है. अगर दूसरी बिरादरी की होती, तो भी आप कुछ न कर पाते. प्यार के मामले में कुछ कहा नहीं जा सकता. भलाई इसी में है कि लड़की के मांबाप से मिल कर हंसीखुशी शादी कर दो."

धनराज को दिनकर की बातों
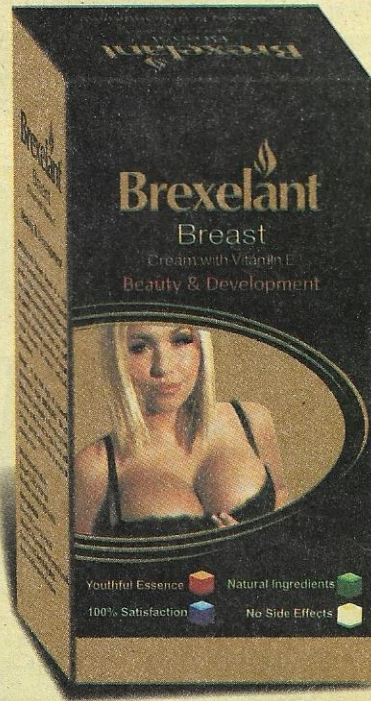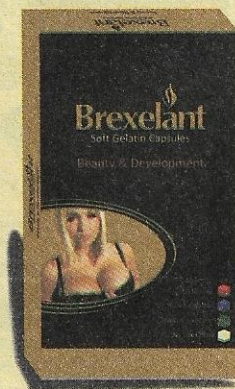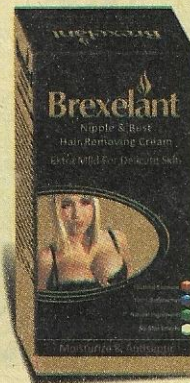
से राहत मिली, लेकिन माली नुकसान का मलाल जरूर दिल में रह गया. वे तेजकुमारी के पिता से बात करने उन के गांव गए, तो दिनकर को भी साथ ले गए.

दिनकर ने कहा, "भाई, आजकल अच्छे लड़केलड़की ढूंढ़ना आसान नहीं है. लड़कालड़की ने आप लोगों की समस्या दूर कर दी है. अब आप लोगों को आपस में एकदूसरे की सुविधा देखते हुए शादी का काम निबटाना है. आप लोग दिल की बातें खुल कर बताएं."

धनराज ने बोलना शुरू किया, "दूरी ज्यादा होने से मैं ने अपने यहां लड़की ला कर शादी करने की बात कही थी. बरात ले कर आने में खर्चा होगा."

चैनसुख ने समाधान किया, "बात यह है कि यहां आसपास रुपयों और उपहारों के रूप में हमारा बहुत व्यवहार फैला है, जो वहां जा कर शादी करने में वापस नहीं मिल पाएगा. हमारी तरफ अनाजपानी का व्यवहार चलता है. एकदूसरे की मदद से बहुत काम चलते हैं. वह भी हमें देखना है.

"बरात लाने के खर्च की आप चिंता न करें, आप पर बोझ नहीं पड़ने देंगे. जब हम बरात इतनी दूर बुला रहे हैं, तो बस का खर्चा हम उठा लेंगे. जिसे हम नकदी के रूप तिलक में बरात लाने के पहले ही दे आएंगे.

"इस बात का जिक्र किसी से न करना, क्योंकि हमारी तरफ लड़की वाले बस का आधा किराया देते हैं और आधा लड़के वाले उठाते हैं."

दिनकर ने दोनों से कहा, "देखिए भाई, सब अभी साफसाफ बात कर लीजिए. शादी के समय कोई झंझट नहीं होना चाहिए."

धनराज ने तुरंत कहा, "हमारे कुछ ऐसे रिश्तेदार हैं, जिन का मानसम्मान अच्छा होना चाहिए. उन के लिए अच्छे कपड़े होने चाहिए."

धनराज के अरमान तो बहुत थे और बताना भी चाहते थे, लेकिन बात बिगड़ जाने के डर से रुक गए.

चैनसुख ने कहा कि पूरे रिश्तेदारों की लिस्ट दे दीजिए. चिंता न करें, अच्छी शादी की जाएगी. सारे बरातियों का अच्छा स्वागत किया जाएगा. उन के खानेपीने, बैठनेलेटने का बढ़िया इंतजाम होगा.

यहां आसपास विवाहघर न होने से एक समस्या गांव में है कि सारे लोगों के लिए संडास का इंतजाम नहीं किया जा सकता, नर्मदा किनारे या तालाब, पोखर के पास सब को खुले में निबटना होगा. नहानेधोने के लिए कुआं और विशाल नर्मदा है.

धनराज मन में कसक लिए वापस हो गए कि नेगदस्तूर में मिलने वाली नकदी का खुलासा नहीं करवा पाए.

बरात बस से आई. साथ में 5 बड़ी कारें भी थीं. खूब शोरशराबे, नाचगाने के साथ बरात चढ़ी.

भारीभरकम इंतजाम देख कर धनराज को अपने समधी पर गर्व हुआ.

रात में शादी हो चुकी थी. सुबह नाश्ते व बरातियों को सफर में खाने की पैकिंग का इंतजाम चल रहा था. विदाई भी जल्दी होनी थी. उपहार में कोई घरेलू सामान ऐसा नहीं था, जो न मिला हो. टैलीविजन, फ्रिज, ओवन, वाशिंग मशीन, अलमारी, पलंगबिस्तर, फर्नीचर और भी बहुतकुछ. इतना कि ले जाने की समस्या दिखाई दे रही थी.

दुलहन के फूफा से चैनसुख तक खबर पहुंची कि जनवासे से पूछा जा रहा है कि बरात कैसे वापस जाएगी.

"जैसे आई है, वैसे ही जाएगी. इस में क्या समस्या है?"

"समस्या यह है कि वे लोग कह रहे हैं कि 5 बड़ी कारें आई हैं, उन के डीजलपैट्रोल का खर्चा कौन उठाएगा?"

"वे ही उठाएंगे और कौन उठाएगा? अरे, तुम 5 क्या 50 कारें ले आओ. हैलीकौप्टर ले आओ. कोई हम जिम्मेदार हैं क्या? बस किराए की बात तय थी, वह पूरी कर दी गई है," चैनसुख ने तमक कर कहा.

बात यहां से वहां गई, वहां से यहां आई. बात बिगड़ने लगी. कभी गुस्सा न करने वाले चैनसुख को गुस्सा आ गया. वे ऊंची आवाज में बोल पड़े, "ऐसे लालची आदमी मैं ने जिंदगी में नहीं देखे. जाओ उन से कह दो कि हम लड़की को विदा नहीं करेंगे. ऐसे लालचियों का कोई भरोसा नहीं. क्या पता, मेरी बेटी को कितनी तकलीफ पहुंचाएं, कहीं उसे मार ही न डालें.

"अगर ज्यादा भावताव दिखाएंगे, तो मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूंगा. उन की पुलिसगीरी धरी रह जाएगी."

सन्नाटा छा गया. यह बात जब जनवासे में पहुंची, तो वहां जयकरन और उस के पिता के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. बिना दुलहन के लौट कर वहां कैसे सब का सामना करेंगे? चिंताग्रस्त जयकरन ने आंखें तरेर कर पिता की ओर देखा. धनराज ने निगाह नीचे कर ली. ●

फैट गो-डी एस

कैप्सूल व ऑयल

JOLLY FATGO-DS कैप्सूल बहुमूल्य जड़ी बूटियों और अर्क जैसे ग्रीन टी, पाईन एप्पल, विलायती इमली, कोकम, दालचीनी, तुलसी, गुग्गल, मेथी, गुल बनफशा, नागरमोथा, त्रिफला, कुल्थी, गुड़मार, सौंठ और चित्रका का मिश्रण है। फालतू चर्बी को अनदेखा न करे ; रहें स्मार्ट और फिट

हर मैडिकल स्टोर पर उपलब्ध ✆ 095925-27500

कैप्सूल और तेल

आंनदमयी वैवाहिक जीवन के लिए अश्वगंधा शिलाजीत, लोह भस्म, मकरध्वज, जयफल, सफेद मूसली, शतावरी, तलमखाना, केसर, वंगभस्म, कौंच बीज, अभ्रक भस्म और स्वर्ण भस्म जैसी बहुमूल्य भस्मों और उम्दा जड़ी बूटियों से तैयार किया Jolly Sunsex Gold Capsule. 2 कैप्सूल सुबह 2 कैप्सूल शाम, कम से कम 21 दिन लेने के बाद शरीर में भरपूर ऊर्जा और क्षमता बढ़ाएें य ऐसा आनन्द, ताकत और जोश जगाऐ हर पल जीने को जी चाहे ।

हर मैडिकल स्टोर पर उपलब्ध ✆ 095925-19500

स्वस्थ निरोगी जीवन जीने के लिए

तुलसी 51

शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ायें

नैचुरल इम्युनिटी बूस्टर

जौली तुलसी 51 पाँच तरह की तुलसीयों के अर्क से तैयार।

स्वस्थ निरोगी जीवन जीने के लिए इसके नियमित सेवन से पेट गैस, पाचन, बदहज़मी, कब्ज,एसीडिटी, सिरदर्द, नींद का न आना, दाद, खाज, खुजली, मलेरिया, पीलिया,पेट और जिगर सम्बन्धी रोग,सर्दी, जुकाम, खांसी, रेशा, बलगम, एलर्जी, सांस की तकलीफ,जोड़ो,घुटनों का दर्द,मुँह की दुर्गन्ध, झड़ते बाल, पेट के कीड़े, मूत्र सम्बन्धी रोग, जलन, मरोड़, पाईरिया, आदि। कील मुहांसे, आंखों के नीचे काले घेरे,स्ट्रैच मार्कस होने पर किसी भी क्रीम में जौली तुलसी 51 की पांच बूंदे मिला कर चेहरे व स्ट्रैच मार्कस वाली जगह पर लगाऐ। प्रयोग करने की अलग अलग विधियों की जानकारी के लिए दवा की पैकिंग में दी गई पुस्तक जरुर पढ़े । टिप्स व काफी जानकारी मिलेगी ।

मिलते जुलते नामों से बहुत सावधान रहें JOLLY तुलसी-51 का नाम देख कर ही खरीदें।

हर मैडिकल स्टोर पर उपलब्ध Helpline:098884-87782

सच्ची सलाह

मैं यादव जाति का हूं और ब्राह्मण लड़की से प्यार करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं. इस के लिए हम क्या करें?

अगर आप घर चलाने लायक पैसे कमा रहे हैं और आप की उम्र 21 साल से ज्यादा है और लड़की भी 18 साल की हो चुकी हो, तो आप दोनों शादी कर सकते हैं. आप के घर वाले मान जाएं तो बेहतर है, वरना कोर्ट मैरिज कर सकते हैं.

•

मैं 17 साल की हूं व 19 साल के दूसरी जाति के लड़के से बहुत प्यार करती हूं. अलगअलग जाति का होने के चलते हमारे घर वाले शादी के लिए नहीं मानेंगे, पर हम जुदा नहीं हो सकते, क्या करें?

आप दोनों को कम से कम 2 साल और इंतजार करना होगा. जब लड़का 21 साल का हो जाए और कोई नौकरी या काम करने लगे, तब आप कोर्ट मैरिज कर सकती हैं.

•

मैं 27 साल का विकलांग हूं. मैं एमए, बीऐड कर चुका हूं और सरकारी नौकरी की तलाश में हूं. मैं एक 25 साल की लड़की से प्यार करता हूं, जो मध्यम वर्गीय परिवार की है. मैं छोटे तबके से संबंध रखता हूं. प्यार का इजहार करने से डरता हूं. क्या वह मेरा प्यार कबूल करेगी?

आप विकलांग हैं और छोटे तबके से हैं, इस वजह से आप को नौकरी आसानी से मिल सकती है. पर बड़े तबके की लड़की आप को मिले, यह आसान नहीं. फिर भी आप उस से एक बार यह बात पूछ सकते हैं. वह मान जाए तो ठीक, वरना उसे मन से निकाल दें.

•

मैं 20 साल का हूं. मुझे गुस्सा बहुत आता है. गुस्से में मैं क्या करता हूं, खुद ही नहीं समझ पाता. मैं गुस्से में घर से भाग गया हूं. समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूं?

आप को अपनी कमी का एहसास है, यह अच्छी बात है. आप यह मान कर चलें कि मांबाप व बड़ों का आदेश ही आप के हित में है, तब आप से गलतियां कम होंगी. दिमाग को ठंडा रखें व गरम चीजों से परहेज करें. किसी डाक्टर से मिल कर उन की राय भी लें. घर लौट जाएं और घर वालों का कहना मानें. वे ही आप के सच्चे हमदर्द हैं.

•

मैं 19 साल का नौजवान हूं. मेरा कद 5 फुट है. मैं एक नामी पहलवान बनना चाहता हूं. क्या यह मुमकिन है?

आमतौर पर पहलवानों का कद 6 फुट या उस से भी ज्यादा का होता है, पर छोटे कद वालों के लिए भी पहलवान बनना मना नहीं है. आप में रुचि है, तो किसी नामी पहलवान का अखाड़ा जौइन कर सकते हैं. अच्छी खुराक व ट्रेनिंग से आप मंजिल पा सकते हैं.

•

मैं अपनी बैस्ट फ्रैंड से सबकुछ शेयर करता था. 5-6 साल पहले मुझे उस से प्यार हो गया, पर उस ने मेरा प्यार नकार दिया और बोली कि हम दोस्त ही ठीक हैं, मुझे किसी से प्यार नहीं करना.

मैं ने अपना मन किताबों व संगीत में लगा लिया और उसे नजरअंदाज करने लगा. ऐसे में उस ने शिकायत की कि मैं दोस्ती नहीं निभा रहा.

मेरी मुश्किल यह है कि उस के नजदीक होने पर मुझे प्यार सताने लगता है. मैं सोचता हूं कि शहर ही छोड़ दूं, पर यह मुमकिन नहीं लग रहा है. आखिर मैं क्या करूं?

बेहतर होगा कि एक बार आप अपनी फ्रैंड से खुल कर सारी बातें कह दें. उस से कहें कि आप सिर्फ दोस्ती नहीं जारी रख सकते. या तो वह आप का प्यार कबूल कर के आप से शादी कर ले या आप की दोस्ती भी भूल जाए.

आखिर जिंदगी के किसी मोड़ पर तो वह शादी करेगी ही, तो आप से क्यों नहीं. आप की दोटूक बातें आप की समस्या हल कर देंगी.

•

मैं एक लड़के से बहुत प्यार करती हूं. उस ने जब अपने घर वालों को इस बारे में बताया, तो उस की मम्मी ने कहा कि अगर यह शादी हुई, तो वे जहर खा लेंगी. हमें क्या करना चाहिए?

अगर आप का प्रेमी गुजारा करने लायक पैसे कमाता है और आप दोनों बालिग हैं, तो कोर्ट मैरिज कर के अलग घर बसा सकते हैं. लड़के की मम्मी सिर्फ धमकी दे रही हैं. वे जहर कतई नहीं खाएंगी.

•

आप अपनी समस्या एसएमएस के जरीए भी इस मोबाइल नंबर 08826099608 पर भेज सकते हैं.

मनारा ने उतारे कपड़े

हीरोइन प्रियंका चोपड़ा की एक कजिन परिणीति चोपड़ा अब फिल्म इंडस्ट्री में अच्छी तरह पैर जमा चुकी हैं, तो दूसरी कजिन मनारा भी फिल्म 'जिद' से अपनी अदाओं के जलवे दर्शकों को दिखाएंगी.

फिल्म 'जिद' के डायरैक्टर विवेक अग्निहोत्री हैं, जबकि इस फिल्म में मनारा ने न्यूड सीन भी दिया है.

अपने कपड़े उतारने के बारे में मनारा ने कहा, "अगर मुझे सिर से पैर तक खुद को ढका रखना हो, तो मैं कोई सासबहू सीरियल करूंगी. मेरे पास अच्छा फिगर है और मुझे उसे दिखाने में कोई दिक्कत नहीं है."

मनारा, आप की बात सही है, क्योंकि जनता को भी आप को इस तरह देखने में कोई दिक्कत नहीं होगी.

'हीरो' बना विलेन

अपनी पहली ही हिंदी फिल्म 'हीरो' से अदाकारी के क्षेत्र में छा जाने वाले जैकी श्रौफ अब इस फिल्म के रीमेक में भी नजर आएंगे. इस रीमेक के फिल्मकार सलमान खान हैं और डायरैक्टर निखिल आडवाणी.

जैकी श्रौफ के लिए यह किरदार इसलिए भी रोमांचक होगा, क्योंकि इस फिल्म में वे विलेन के रूप में नजर आएंगे. देखते हैं कि 'हीरो' का यह विलेन क्या गुल खिलाएगा.

खूब हंसाएंगे 'मस्तीजादे'

डायरैक्टर मिलाप जावेरी 'मस्ती', 'ग्रैंड मस्ती', 'क्या कूल हैं हम' और 'क्या सुपरकूल हैं हम' जैसी फिल्में बना चुके हैं और अब वे तुषार कपूर और सनी लियोन को ले कर एक नई कौमेडी फिल्म 'मस्तीजादे' बना रहे हैं, जिस में सनी लियोन लाल रंग की बिकिनी में नजर आएंगी.

सनी लियोन के इस बिकिनी अवतार पर मिलाप जावेरी ने कहा कि फिल्म में बिकिनी है, तभी तो फिल्म बिकनी है. ●

प्रतियोगिता नं. 522

कूपन भेजने वालों से: नीचे दिए गए 5 सवालों के हरेक के 4 जवाब दिए जा रहे हैं. आप जिस जवाब को ठीक समझें, उस पर सही (✓) का निशान लगाएं.

सभी सवालों के सही जवाब देने वाले को हजारों रुपए का नकद इनाम. सही जवाब देने वाले ज्यादा होंगे तो 14 लोगों के नाम लाटरी से निकाले जाएंगे. रकम बांट कर दी जाएगी. *यहां छपे कागज को काट कर साधारण डाक से भेजें.*

आखिरी तारीख 15 दिसंबर, 2014 है. | कोई फीस नहीं

A. जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक किस देश के राजा हैं?
- (B) नेपाल ☐
- (C) इंडोनेशिया ☐
- (D) थाईलैंड ☐
- (E) भूटान ☐

F. गोवा के नए मुख्यमंत्री का नाम?
- (G) फ्रांसिस डिसूजा ☐
- (H) राजेंद्र अर्लेकर ☐
- (I) लक्ष्मीकांत पार्सेकर ☐
- (J) माइकल लोबो ☐

K. 'मानवाधिकार दिवस' कब मनाते हैं?
- (L) 1 दिसंबर ☐
- (M) 5 दिसंबर ☐
- (N) 8 दिसंबर ☐
- (O) 10 दिसंबर ☐

P. क्रिकेट के वनडे मैचों में सब से तेज 6 हजार रन बनाने वाला खिलाड़ी?
- (Q) विवियन रिचर्ड्स ☐
- (R) विराट कोहली ☐
- (S) सचिन तेंदुलकर ☐
- (T) रिकी पोंटिंग ☐

U. फिल्म 'ऐक्शन जैक्सन' का हीरो?
- (V) टाइगर श्रौफ ☐
- (W) रणवीर सिंह ☐
- (X) रितिक रोशन ☐
- (Y) अजय देवगन ☐

प्रतियोगिता नंबर 522

इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पता है:
सरस सलिल, इनाम प्रतियोगिता-522, पोस्ट बाक्स - 5814, नई दिल्ली-110055.

नाम.. उम्र..............

पूरा पता (फोन सहित)..

....

इनाम प्रतियोगिता-519 के उत्तर

प्रतियोगिता 519 के उत्तर : A. (D), F. (I), K. (M), P. (S), U. (X).

प्रतियोगिता 519 के विजेता : 1. नीलम रावत, पौड़ी गढ़वाल, 2. उर्वशी कुमारी, गाजीपुर, 3. पिंकी रानी, मुक्तसर साहिब, 4. मुक्ति प्रकाश टोपनो, सिमडेगा, 5. सुरेश कुमार, दक्षिण गोवा, 6. जीएल स्वामी, कोलार, 7. प्रदीप कुमार, दिल्ली, 8. प्रशांत, देहरादून, 9. अरुण कुमार, द्वारा 56 एपीओ, 10. गुरमीत सिंह, सुंदरगढ़, 11. संजय पांडेय, चौबीस परगना, 12. अमित आर्य, दिल्ली, 13. संजय कुमार, भटिंडा, 14. राजेश कुमार यादव, हैदराबाद.

मोटरसाइकिल विजेता : बिशंभर राम, मुंबई.

यूनाईटेड प्रेशर कुकर विजेता : अल्पेश एस. सिंह, वडोदरा.

चिट्ठीपत्री

समाजसेवा को सलाम

नवंबर (प्रथम), 2014 अंक की 'गहरी पैठ' में आप ने सही कहा है कि जो लोग समझते हैं कि पीड़ितों, बीमारों, दबेकुचलों और गरीबों की सेवा करना बेकार काम है, तो वे गलत हैं. भले ही समाजसेवा में हजार जोखिम हैं, लेकिन समाज लोगों के ऐसे योगदान को नहीं भूलता है.

समाजसेवा के लिए कैलाश सत्यार्थी और मलाला यूसुफजई को नोबल अवार्ड मिला है, उस के लिए उन्हें बधाई. नौजवानों को इस से अच्छी नसीहत मिलेगी.

-राजू कुमार साह, एस.

●

बच्चों पर लगाम

नवंबर (प्रथम), 2014 अंक की 'गहरी पैठ' में बच्चों के अपराध पर जो रोशनी डाली गई है, वह अच्छी जानकारी है. अब बच्चों के अपराधों पर लगाम लगाने के साथसाथ उन्हें सजा भी देनी होगी. इस से पीड़ितों के जख्मों पर मरहम लगेगी और बच्चे भी यह नहीं समझेंगे कि कुछ महीने या साल बाल सुधारगृह में रह लेंगे और फिर छुट्टी.

इस के अलावा लेख 'शौचालय की उम्मीद में...' से औरतों के दर्द को समझा. अब वक्त आ गया है कि उन्हें खुले में शौच जाने से नजात मिले.

स्थायी स्तंभ 'परदे की दुनिया' में रामगोपाल वर्मा की आने वाली फिल्म 'श्रीदेवी' में बच्चों का नजरिया शर्मनाक तरीके से दिखाया गया है.

-आबिद मजीद इराकी, जहानाबाद.

●

सोच बदलनी होगी

नवंबर (प्रथम), 2014 अंक में छपा लेख 'भगवान भटकते गलीगली' ने समाज को दर्पण दिखाने का काम किया. हम कितने भी सभ्य हो जाएं, भगवान का नाम आते ही हम भावनाओं में बह कर दानदक्षिणा देने से पीछे नहीं हटते हैं, चाहे वह कोई धार्मिक जगह हो या फिर चलतेफिरते साधु या फकीर. ये लोग जनता को अपनी चिकनीचुपड़ी बातों में फंसा कर उन्हें लूटते हैं.

इस अंधविश्वास से बचने के लिए जनता को अपनी सोच बदलनी होगी.

-नेमीचंद कोठारी, मंदसौर.

●

शौचालय की जरूरत

नवंबर (प्रथम), 2014 अंक में छपा लेख 'शौचालय की उम्मीद में...' पढ़ा. यह सच बात है कि अब हर गांवघर में शौचालय होने चाहिए. ऐसा नहीं है कि ग्राम पंचायत के पास शौचालय बनवाने के लिए पैसे नहीं आते हैं, पर इस के लिए गरीबों को सरपंच के पास चक्कर लगाने पड़ते हैं. लेकिन अगर राज्य के मुख्यमंत्री कुछ कठोर कदम उठाएं, तो इस योजना को अमलीजामा पहनाया जा सकता है.

-नवीन कुमार, एस.

●

अच्छी जानकारी मिली

नवंबर (प्रथम), 2014 अंक में छपा लेख 'भगवान भटकते गलीगली' पढ़ कर बहुत अच्छी जानकारी मिली कि किस तरह कुछ शातिर लोग धर्म के नाम पर भोलीभाली जनता को ठगते हैं.

-रघुवीर सैनी, एस.

●

हौसला बढ़ता है

मैं 'सरस सलिल' की पुरानी पाठिका हूं. मुझे इस पत्रिका में हर सामग्री बहुत अच्छी लगती है. इस में छपी कहानियों से सीख मिलती है, ज्ञान बढ़ता और लेखों को पढ़ कर हौसला बढ़ता है.

-एस. फातिमा, बेंगलुरु. ●

पत्रिका में छपी बातों पर अपनी राय लाखों पाठकों को भी बताएं. आज ही पैन उठा कर इस पते पर पत्र लिखें-'चिट्ठीपत्री', सरस सलिल, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. या एसएमएस द्वारा इस फोन नंबर 08826099608 पर भेजें.

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2012-14/U(C) 163/2012-14 Saras Salil (Hindi) December-I
P.O. SRT Nagar Posting Dt. 16 to 22, Published on 15/11/2014